# शून्य से शून्य तक

दृश्य कविताएं

लेखन :

सुरेश चौधरी 'इंदु"

शुक्तिका प्रकाशन

**ISBN : 978-93-94660-10-6**

# शून्य से शून्य तक

## प्रकाशक :

ए & ए इंटरप्राइज़
143 डी , शरद बोस रोड, कोलकाता 700026
प्रबंध कार्यालय :
516/4 बी. एल . शाह रोड
ग्राउन्ड फ्लोर, कोलकाता 700038
मो: 94324198215
ईमेल: enterprisesaa2019@gmail.com

मूल्य : 300/-

@सर्वाधिकार लेखकाधीन

लेखक: सुरेश चौधरी 'इंदु'

मुद्रक: मिशका इन्फोटेक : कोलकाता

A BOOK OF 61 POETRIES ON LIFE PANORAMA BY SURESH CHOUDHARY 'INDU'

# अनुक्रम :


| क्र: | रचना का शीर्षक | पृष्ठ |
|---|---|---|
| 1 | अग्रेषण : रचना सरन | 5 |
| 2 | आत्मानुभूति : सुरेश चौधरी | 8 |
| 3 | प्रेम लिखता हूँ | 11 |
| 4 | बुढ़ापा | 16 |
| 5 | मैं भारत की नारी हूँ | 19 |
| 6 | बाबूजी | 23 |
| 7 | खत | 27 |
| 8 | ज्वार भाटा | 31 |
| 9 | बचपन के दिन | 33 |
| 10 | विजियादशमी पर | 37 |
| 11 | पुष्प की व्यथा | 40 |
| 12 | पगली | 43 |
| 13 | वक्त जर्जर है | 46 |
| 14 | एकाकीपन -1 | 48 |
| 15 | एकाकीपन -2 | 50 |
| 16 | एकाकीपन -3 | 53 |
| 17 | अन्नदाता | 55 |
| 18 | दशहरा | 57 |
| 19 | जिंदगी | 59 |
| 20 | प्रभु तुम्हें प्रणाम करना चाहता हूँ | 61 |
| 21 | मेरी लाचारी | 63 |
| 22 | ताजमहल | 65 |
| 23 | टूट गई डाली | 69 |

| | | |
|---|---|---|
| 24 | जीवन की पहचान | 71 |
| 25 | खोई स्मृति | 73 |
| 27 | शून्य से शून्य तक | 74 |
| 28 | निहारने लगा गगन | 75 |
| 29 | सुनो | 77 |
| 30 | एक सरिता का उद्बोधन | 79 |
| 31 | मेरा भारत | 81 |
| 32 | 2013 की रचना | 82 |
| 33 | अमिय रस रसवंती | 83 |
| 34 | परछाई | 85 |
| 35 | भ्रम | 87 |
| 36 | भ्रम -2 | 88 |
| 37 | पतला मार्ग | 90 |
| 38 | अभिलाषाएं | 92 |
| 39 | राखी | 93 |
| 40 | मौन | 95 |
| 41 | होली-व्यंग्य | 96 |
| 42 | स्थित प्रज्ञ | 98 |
| 43 | आत्म-मंथन | 100 |
| 44 | चीर विश्राम | 102 |
| 45 | वन बालाएं | 103 |
| 46 | जीवन | 104 |
| 47 | चाह | 105 |
| 48 | जीवन उद्देश्य | 106 |
| 49 | वेदना | 108 |
| 50 | काल के अंतराल मे | 110 |

| | | |
|---|---|---|
| 51 | मेरा जीवन | 112 |
| 52 | अंधकार | 113 |
| 53 | पगडंडियाँ | 114 |
| 54 | एक नई सुबह हो चुकी थी | 116 |
| 55 | मन आहत | 118 |
| 56 | रुष्ट हो गया भगवान | 120 |
| 57 | दर्द | 123 |
| 58 | सत्य | 125 |
| 59 | आदिवासी महिलायें | 127 |
| 60 | अंतस उद्वेलित | 131 |
| 61 | अर्गलाएं | 133 |
| 62 | मेरा बचपन | 135 |
| 63 | अजब बेचैनी | 138 |

# अग्रेषण :

## रचना सरन

सदस्य_ पश्चिम बंग हिंदी अकादमी,
कोलकाता


प्रतिष्ठित साहित्यकार आदरणीय सुरेश चौधरी जी के इस *दृश्य आधारित* कविता संग्रह से गुज़रते हुए जीवन के विविध पहलुओं पर उनके विचारों के वृहद् दायरों को मापने का मौका हासिल हुआ। उनकी रचनाओं में कहीं प्रेम है तो कहीं एकाकीपन, कहीं जीवन का दर्शन है तो कहीं बदलते वक़्त की तमाम तस्वीरों का चित्रण।
वे अपनी रचनाओं में प्रेम को दर्शन का चिंतन, संस्कृति की धरोहर और ईश्वर सा पूजनीय मानते हैं । कविताओं के माध्यम से सामाजिक मसलों को उठाया गया है तथा सार्थक संदेश भी संप्रेषित किये गये हैं।
जब समय पर आवाज़ नहीं उठाई जाती ,तब होने वाले घातक परिणामों की दुष्करता को कविता " मौन" में प्रभाविकता से चित्रित किया गया है....

" जब मन न चाह कर भी,
मौन रह जाता है,
तो नियति दुष्परिणामों में परिवर्तित हो जाती है
और भविष्य सदा विडम्बना पर रोता है।"

देश की राजनैतिक अदूरदर्शिता और विदेशी प्रचलनों व खान-पान के अंधानुकरण का परिणाम झेलते कृषकों की दुर्गति का चित्रण है कविता

"भूमि सहनशील है" में । वहीं समाज में व्याप्त रावणरूपी नकारात्मक शक्तियों पर सटीक तंज कसा है कविता " दशहरा" में ..

" अब क्या करूँ
कहां से लाऊं इतने राम,
जो करें रावण का काम तमाम,
अब तो पृथ्वी पर
राम की खेती ही बंद हो गई,
बस रावण ही उग रहे हैं,
कौवे खेतों को चुग रहे हैं।"

2013 में लिखी गई कविता " आजकल का भारत " में देश में व्याप्त अनाचार से क्षुब्ध कलम का मानस प्रकट होता है ।
कवि के अनुसार ताजमहल का परिचय " प्यार की निशानी" के स्थान पर उत्कृष्ट कला के नमूने के रूप में होना चाहिए। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर स्थापित धारणा ने कविता " ताजमहल" का रूप धरा है ।
कविता " विजयादशमी पर" में नवदुर्गों के विसर्जन को कन्याओं व स्त्रियों के प्रताड़न और शोषण के दृश्यों में परिलक्षित कर दुष्कर्मियों के विसर्जन का संदेश दिया गया है।
जहां एक ओर " स्वर्गानुभूति " में प्रकृति के प्रेमसिक्त सौंदर्य का सुंदर चित्रण है, वहीं दूसरी ओर आत्मा और परमात्मा के मिलन को सागर और सरिता के बिम्बों से वर्णित किया गया है कविता" एक सरिता का उद्बोधन में " ।
" ख़त, "बचपन के दिन, " ये पगडंडियां" कविताओं में बीते समय के सुकून और आधुनिक तकनीकयुक्त मशीनी जीवन की तुलना सोचने पर बाध्य करती है।
" जग का यही विधान है ", " शून्य से शून्य तक" कविताएं जीवन के परम सत्य को स्थापित करती हैं । हास्य रचना "होली" गुदगुदाती है।

# शून्य से शून्य तक

कल्पनाओं, भावनाओं और विचारों के बहुल रंग पुष्पों का गुच्छा है यह काव्य संग्रह।

शुभकामनाओं सहित,
रचना सरन,
सदस्य_ पश्चिम बंग हिंदी अकादमी,
कोलकाता

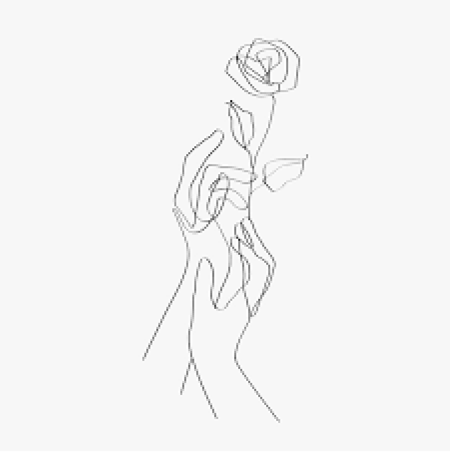

# आत्मानुभूति

लंबी डगर की  यह यात्रा
कितनी  टेढ़ी मेढ़ी,
निर्दिष्ट पथ से बिखरती,
आशाओं के शब्द से संवरती,
कैसी विचित्र यह जीवन यात्रा !
अनमोल क्षणों को आँचल में सहेजती,
दु:ख को कुरेदती,
जीवन यात्रा का यही तो संकलन है ,
उपलब्धियों का यही तो आकलन है ,
शून्य से प्रारंभ यात्रा
शून्य पर समाप्त ||

"शून्य से शून्य" तक यह शीर्षक है प्रस्तुत काव्य संग्रह का । शीर्षक सुझाया है प्रसिद्ध रचनाकार रचना सरन ने। रचना तनुजावत स्नेही है। 30 पुस्तकों के सफल प्रकाशन के पश्चात दो वर्षों से कोई नई पुस्तक नहीं आ रही थी जबकि लेखन तो निरन्तर हो रहा है। लैपटॉप, मोबाइल, सोशल मीडिया की जांच की जाये तो कई पुस्तकें और बन जाएं।
कई दिनों से मन था कि जो कविताएं मैंने दृश्य प्रस्तुत करते लिखी हैं उनका एक संकलन अलग से हो। अतः इस पुस्तक ने आकार लिया। कुछ रचनाएं अन्य पुस्तक में आ चुकी है परंतु उन्हें भी एक थीम के अंतर्गत इस पुस्तक में सम्मलित किया हूँ कुछ संशोधन के साथ।
मनुष्य का जीवन क्या है खाली हाथ आये खाली हाथ चले गए, न कुछ साथ लेकर आये न कुछ साथ लेकर गए। जीवन यात्रा जो शून्य से प्रारम्भ हुई थी, वह शून्य पर ही समाप्त होती है। बीच का समय एक

## शून्य से शून्य तक

नाट्य पटल सा होता है रिक्त स्थान पूर्ति के। यह रिक्त स्थान हम किस वस्तु से , किस सोच से भरते हैं यह ही जीवन साधना है। गीता में भी इसी लिए कहा गया है जैसे कर्म करेगा वैसे फल पायेगा।

हे तेजोमयी माँ !!!!
समग्र तेजों को समन्वित कर
बनी तू तेजस्विता...
हे नारी शक्ति स्वरुप महिसासुर मर्दनी
सिंदूर खेल का समापन हो चुका है,
जलाशय के नील शतदल
जिन्हें अर्पित कर कर तुझे पूजा
वे नील शतदल बाहें फैलाये
तुझे अपने आगोश में लेने को तत्पर हैं
तुम्हे तो जाना ही होगा माँ ,
यही तो रीत है

आद्योपांत जीवन एक चित्र है, एक दृश्य है, इन दृश्यों को कविता के माध्यम से बनाने का प्रयत्न किया है। अगर सफल हुआ हो तो अवश्य लिखियेगा। कोई दृश्य आपको लगे कि यह तो आपका , आपकी निजी जीवन यात्रा का प्रतीक है तो मेरी लेखनी सफल होगी।
कुल 71 कविताएं छंद मुक्त है परंतु लय मुक्त नहीं । हर कविता के लिखने के पीछे एक कथा है

कौमार आचारेत्प्राग्यो धमान भागवत निः
दुर्लभ मानुषं जन्म तदप्यधुवमर्थ्दम || ( श्रीमद भागवतम ७.६.१.)
(मानव समाज में जो विषमता व्याप्त है उसका मूल कारण ईश्वर विहीन सभ्यता एवं नियमों का अभाव है, ईश्वर एक है, जो सर्वशक्तिमान है,

# शून्य से शून्य तक

जिससे प्रत्येक वस्तु का उद्भव होता है, उसी से सबका पालन होता है ।)

जिंदगी के इस लंबे सफर के इस मोड पर आकर लगता है ---थक गया हूँ । शारीरिक थकन से ज्यादा मानसिक सम्प्रेदन, यथावत अवस्था से अभिभूत, अतीत से सबक लेता हुआ, वर्तमान में उत्पीडन का प्रभाव डाल रहा है । कदाचित उम्र का इतना  लम्बा अंतराल ही आयु के कारण हो रहा है या फिर अधोमुखी, अनावश्यक महत्वाकांक्षा अंतर्मन से बाहर आने को तरस खाती हुई पीड़ा प्रदान कर रही है । जीवन पीड़ा को लघु करने का सर्वश्रेष्ठ साधन अभिव्यक्ति होती है चाहे वह अभिव्यक्ति संगीत के रूप में या गायन के रूप में हो या काव्य लेखन के रूप में। जो व्यक्ति भावनाओं को अभिव्यक्त करना सीख लेता है, वह कभी अवसादित नहीं होता अन्यथा उम्र के इस पड़ाव पर अधिकांश को अवसाद ग्रस्त देखा गया है।

शून्य से शून्य तक की यात्रा,  मेरी अभिव्यक्ति की यात्रा है। मेरे कर्म फल की ,मेरे विचरण की अभिव्यक्ति है।

सादर नमन ।

सुरेश चौधरी

" रथयात्रा विक्रम सम्वत् 2080 " 20 जून 2023

# 1. प्रेम लिखता हूँ

सामान्यतः मैं अध्यात्म, धर्म और प्रेरक रचना ही लिखता हूँ तो एक दिन लोगों ने पूछा क्या मैं प्रेम लिखता हूँ तब मैने कहा:

जी हाँ मैं भी प्रेम लिखता हूँ
कब लिखता हूँ वे कुछ दृश्य देखिए

प्रेम दिवस पर देखे सैकड़ों प्रेम इजहार
प्रेम प्रीत मोहब्बत और प्यार
कभी कभी मैं भी प्रेम लिखता हूँ
जी हां मैं प्रेम लिखता हूँ।
कब लिखता हूँ,
देखता हूँ जब
माँ का आँचल है तार तार
अँखियों से बहती अनवरत अश्रुधार
गोद में पड़ा शिशु भूख से है बेजार
तब शुष्क स्तन से स्वतः उतरती
दुग्ध की बूंदे दो चार
देख यह वात्सल्य दृश्य
जगत का यह वास्तविक सत्य
तब मैं प्रेम लिखता हूँ
जी हां प्रेम लिखता हूँ।

# शून्य से शून्य तक

धूलधूसरित बालक
जब थक स्कूल से आता है
दौड़ वह माँ के आगोश में समा जाता है
लाख बलैया ले माँ उसका शीश जब चूमती है
देख यह नजारा समस्त धरा भी झूमती है
मातृ वात्सल्य को परिभाषित कौन कर पाए
मेरी लेखनीं नतमस्तक हो मौन रह जाए
स्वतः तब शब्द गूंजता है
और मैं प्रेम लिखता हूँ
जी हाँ प्रेम लिखता हूँ।

धरा पर गगन बरसा रहा हो अंगार
कृषक के हाथों धरे कृषि औजार
माथे रोटी की टोकरी
हाथों छाछ का गिलास
लेकर आती हो पत्नी
बैठ प्रेम से पोंछ स्वेद कण आँचल से
कौर रोटी का खिलाती हो पत्नी
वसुंधरा भी देख शास्वत प्रेम
हौले हौले मुस्काती है
लेखनी मेरी भी तब प्रेम गीत गाती है
तब मैं प्रेम लिखता हूँ
जी हां मैं प्रेम लिखता हूँ।

# शून्य से शून्य तक

दौड़ भैया जब बहना के दुपट्टे से
जूठे हाथों को पोछ हंसता है
अंतरंग मोह स्पंदन कर लरजता है
बहना मुस्का हलके से
मुख चपत लगाती है
पकड़ कपोल उसके धीरे से सहलाती है
तब स्नेहसिक्त दृश्य देख
मैं प्रेम लिखता हूँ
जी हां मैं प्रेम लिखता हूँ।

सुरमई चांदनी रात है
तारों की सजी  बारात है
गगन पर  स्निग्ध शशि प्रभा बिखेर रही हो
पत्नी की गोद मे रखा हो सर
और पत्नी केशों में अंगुलियां फेर रही हो
प्यार का नशा और पत्नी के मीठे बोल
और अनजान खामोशी का सुरूर
कल की चिंता क्षण में हो जाती दूर
देख प्रेम का यह शुद्ध बन्धन
लेखनी करती है मंथन  और
तब मैं प्रेम लिखता हूँ
जी हाँ मैं प्रेम लिखता हूँ।

सरहद पर चल रही थी दनादन गोलियां
और साथ में हर हर महादेव की बोलियां
अभी अभी तो विवाह हुआ

## शून्य से शून्य तक

सुहागरात भी न मनाई ढंग से
तभी संदेशा आया था जंग से
मातृभूमि बुला रही है
बलिदान की घड़ी आ रही है
मेहंदी रचे हाथों में ले आरती का थाल
आंखों में अश्रु होठो पर मुस्कान
कुंकुम तिलक लगाया भाल
शब्द एक यह बोलीं
पीठ पर नही खाना तो सीने पर खाना गोली
देख वीरांगना का देश प्रेम
तब मैं प्रेम लिखता हूँ
जी हाँ मैं प्रेम लिखता हूँ

मेरा प्रेम कोई विषय नही प्रदर्शन का
यह तो विशुद्ध चिंतन है दर्शन का
मेरा प्रेम गोपी गीत सा पवित्र है
मेरा प्रेम मीरा का भक्त चरित्र है
प्रकृति के कण कण में विराजमान है
जड़ में चेतन में पशु में खग में सब में समान है
भारतीय संस्कृति की धरोहर सा सच्चा वंदनीय है
सीता राम, राधा कृष्ण, उमा शंकर सा पूजनीय है
यह नही अश्लीलता से भरा
न वासना से भरा
और न कलंकित है
बल्कि मेरा प्रेम
शुद्ध सात्विक मानस पर अंकित है।

# 2. बुढापा

क्या यही बुढ़ापे की निशानी है

सारी सारी रात
आधा जगा सा
आधा सोया रहता है
अनुभव की बुझी भट्टी में
राख बने विचारों मे
अपने को डुबोया रहता है
न जाने कौन से भंवर जाल में सोया रहता है
इस उम्र के हर शख्स की यही कहानी होती है
क्या यही बुढ़ापे की निशानी होती है

खाने की तमन्ना
और मुंह में स्वाद बकरार है
मगर चाय में रोटी डुबा डुबा
खाने को लाचार है
पतझड़ के फूल से झड़ रहे
अब दांत है
वाह भगवान
क्या तूने दी सौगात है
बस इतनी सी तो परेशानी होती है
क्या यही बुढ़ापे की निशानी होती है

## शून्य से शून्य तक

समंदर की गहराई में
उठती बैठती लहरों सा
विचित्र चरित्र होता है
जब इंसानी चहरों का
और जब वह अनुभवों की
खान होता है
फिर भी चुप रहना ही वर्तमान होता है
वो तो ढंग से सुन भी नहीं पाता है
अपनी ही सुनाये जाता है
बक मुद्रा धारण किये मौन ही रहता है
कितनी बातें कितनी कहानी
जेहन में दबी अनजानी होती है
क्या यही बुढ़ापे की निशानी होती है

यादों के झरोखों से ढूंढ ढूंढ
कोई जब मोती लाता है
तब तब नया
एक इतिहास बन जाता है
उस इतिहास को पढ़ाने में
बहुत आनंद आता है
ठहरी आंखे नई चमक दीवानी होती है
क्या यही बुढ़ापे की निशानी होती है

सावन आता है

## शून्य से शून्य तक

मन घबड़ाता है
बसंत में कुछ कुछ होता है
मन की बात मन मे संजोता है
आंखों ही आंखों से देख
पीत वसना वसुन्धरा
सोच सोच यौवन की बातें
कोसता बुढ़ापे को
इतनी सी ही तो परेशानी होती है
क्या यही बुढ़ापे की निशानी होती है

अस्ताचल गामी
भुवन भास्कर की अरुणिमा देख
सांध्य अर्घ को कदम
जब अपने आप चलने लगे
नई भोर में नव दुकूल
पहनने को मन मचलने लगे
चित्त शांत और
तन जब अर्चन को कहने लगे
तब मोक्ष की अनुभूति बहुत पुरानी होती है।
हाँ हाँ यही तो बुढ़ापे की निशानी होती है।

# 3. मैं भारत की नारी हूँ

बहुत पहले एक रचना पढ़ी थी औरतें अजीब होती हैं औरतें संबोधन नारी के लिए मुझे जचा नहीं, कुछ तो आदरपूर्ण शब्दावली होनी चाहिए। खैर उसके कुछ शब्द दिमाग मे बस गए थे उससे ही प्रभावित होकर यह रचना लिखी है।

मैं भारत की नारी हूँ
पृथा सी सहनशील अति धीर हूँ
किसी चित्रकार के कल्पना की खींची सी तस्वीर हूँ
टुकड़ों टुकड़ों में बंटी गृहस्थी की तकदीर हूँ।
क्या हूँ, क्या नहीं हूँ; कुछ तो हूँ पर होकर भी कुछ नहीं
आधी इधर आधी उधर न जाने किधर
पर पूरी कहीं नहीं , होती हर जगह बिखरी  बिखरी
हाथों पर खींची अमिट लकीर हूँ
पृथा सी सहनशील अति धीर हूँ

उठ जाती हूँ सुबह सबेरे
उनींदी सी आधी नींद में आधी जागी सी
चढ़ा पानी चाय का दौड़ पड़ती हू दरवाजे पर
लेने दूध पाव रोटी सोचने लगती हूँ अभी से
क्या पकाऊँ, क्या खिलाऊं
उंघती भी हूँ तो जगती सी सोती सी
घर में बहती शीतल समीर हूँ

## शून्य से शून्य तक

पृथा सी सहनशील अति धीर हूँ

पता नहीं कहाँ खोई रहती हूँ
करते करते पूजा मुड़ मुड़ सी जाती हूँ
सुन खडखडाहट पति के पदचाप,
आरती के दीपक सी जलती
किचन की सब्जियों में उबलती
छौंकन की जगह स्वयं को छौंकती
और साथ ही छौंकती हूँ अपना वजूद
मुस्कराती हूँ फिर भी लगती गम्भीर हूँ
पृथा सी सहनशील अति धीर हूँ

मैं सपने भी देखती हूँ, पर पुरे कभी नहीं
अधूरे से वे भी उधार के
पति महान के
बच्चों के उत्थान के
खोज कर अपना बचपन
बच्चों में पिरोती हूँ सपने उजालों के
रह कर खुद अंधेरों में दीया जलाती हूँ
क्योंकि पति की , बच्चों की तकदीर हूँ
पृथा सी सहनशील अति धीर हूँ

उफनते दूध सी
अन्दर ही अन्दर उफनती

## शून्य से शून्य तक

चढ़ा अपने अस्तित्व को चूल्हे पर
बीच में छोड़
नए दिन को सजाने
आटे सनी अँगुलियों को डुबो
नयी नयी कविताओं के रंगों में
रंगती हूँ कल्पनाओं को
धुओं के बादलों से परे
क्योंकि मैं किस्मत से बहुत अमीर हूँ
पृथा सी सहनशील अति धीर हूँ

न तो मर्जी से जी पाती हूँ
न मर्जी से मर पाती हूँ
कोई भी काम सलीके से नहीं कर पाती हूँ
बस सारी रात
खिड़कियाँ खोलती हूँ
बंद करती हूँ
हवा के झोंको सी
रुके पानी सी
सुबह की आस में
दामन के मोती पिरोती हुई प्राचीर हूँ
पृथा सी सहनशील अति धीर हूँ

और जब घुटे बादल
आसमान पर फट पड़ते हैं
तो मैं भी फट पड़ती हूँ

## शून्य से शून्य तक

रोक हवाओं का रुख
छोड़ पापड़, आचार, कपडे की दुनिया
फिजाओं में खिलखिलाती
तूफानों से बचाने टूटते घर को
रोक लेती हूँ झंझावत में फंसी नैया को
न घर, न आँचल, न परिवार
कुछ भी तो नहीं देती डूबने
लक्ष्मी बाई बन हुंकारने लगती हूँ
माँ दुर्गा सी सिंह सवार हो
अरि दमन को तत्पर शमशीर हूँ
पृथा सी सहनशील अति धीर हूँ

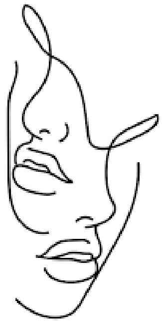

# 4. बाबू जी

माँ पर आपने कई कविताएं सुनी होंगी पर पिता पर बहुत कम लिखा गया है, यह एक काल्पनिक रचना नही है, एक सत्य घटित घटना है, मेरी अंतर्मन की आवाज़ है, शायद आपको पसंद आये, अगर पसंद आये तो आशीर्वाद दीजियेगा ।।

दुपहरी की बेला थी
अंतस भी था कुछ उचटा उचटा सा
संयमित करना चाहता था निज को
फिर भी न जाने क्यूँ था उखड़ा उखड़ा सा,
विगत स्मृतियों में,
भुलाकर
साहित्य में डुबाकर
सो जाना चाहता था
पुस्तकों की अलमारी के द्वार खोल
खोजने लगा मन चाही पुस्तक,
पढ़ कर जिसे
खो जाना चाहता था.

दृष्टी पड़ी अकस्मात
बाबूजी की लिखी पुरानी डायरियों पर
हुक सी उठी
स्पंदित हुईं भावनाएं

## शून्य से शून्य तक

चित्रित हुई समस्त घटनाएँ .

उठाकर डायरी
पढने लगा
विगत स्मृतियाँ
चलचित्र सी तैरने लगी
हर अक्षर अब भी स्वर्ण सा चमक रहा था
सूखे गुलाब की पंखुड़ी सा महक रहा था .

वे मात्र कागज के पन्ने नही थे,
हर पन्ना सम्पूर्ण इतिहास था,
मध्यवर्गीय परिवार के मुखिया के
उत्तरदायित्वों का अहसास था .

नयन नीर
बहने लगे
प्रगाढ़ता क्या होती है
हर शब्द कहने लगे
संबंधों के बंधन
कितने सुदृढ़ होते हैं
हम समझने लगे .

उनकी गोद
की ममत्व भरी ऊष्णता
अब भी हो रही थी प्रतीत

## शून्य से शून्य तक

लग रहा था
एक
वट वृक्ष के तले
हर आपत्ति से परे
बैठा हूँ सुरक्षित ।

भानु प्रकाश
तेज़ वारिद पटल की गोद में छुप चूका था
रजनीश भी
किरणों की प्रभा भूल
गुम हो चूका था
तब अँधेरे मार्ग पर
ले एक छोटा सा दीपक
आपने मार्ग दिखाया

जीवोन्मुख विचार धाराओं को
दे प्रगतिशील आयाम,
जो दिखाया था आपने मार्ग
आज भी प्रशस्त है
जो कुछ भी हूँ
बाबूजी
आपका है बताया ।

विडम्बना इतनी है

# शून्य से शून्य तक

अल्पायु में
आप छोड़ चले गए
इन निर्बल स्कन्धों पर
उत्तरदायित्व का
भार छोड़ चले गए
निरंतर चल रहा हूँ
थक कर भी अथक हूँ,
इस विशाल जगत में
सब के साथ हूँ
फिर भी पृथक हूँ,
प्रेरणा आपकी साथ है चल रही
एक दीप्ति सी भी बढ़ रही
मैं भी आगे बढ़ रहा ।

# 5. ख़त

ख़त
जो संभाल कर रखे थे हमने
आज भी वैसे ही रख्खे हैं
अंतस के तहखाने में
जब भी
उदासियाँ छाती है
मन अतीत में डूब जाता है,
संदूक खोल
उस अनमोल खतों में खो जाता हूँ,

हर हर्फ़
सोने सा चमकता
खुशबु बिखेरता
रजनीगंधा सा
अतीत को सुरभित करता
दिल दिमाग पर रोशन हो जाता है,

खतों का मोल
कितना है
क्या है
वो क्या जाने जो
ईमेल, व्हाटसएप्प की दुनिया में जीते हैं,
डाकिये का इंतज़ार

## शून्य से शून्य तक

ख़त का मिलना
हाथों का थरथराना
दिल की धड़कनों की तीव्रता
गुलाबी नशा
कैसे चढ़ता है
कैसे उतरता है
क्या जाने अब लोग
अब तो
बटन की क्लिक पर संवाद होते हैं
न तो अहसास होते हैं,
न छुवन भरे अल्फाज होते हैं,

पन्द्रह पैसे का अंतर्देशीय पत्र
लिए गुलाब की खुशबू
जब हाथों पर आता था
मानो जन्नत समा गई हो
रूठना मनाना
शिकवे शिकायत
आंसुओ की तहरीर
हर अक्षर पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होती थी
पढ़ कर कलेजा बाहर धकधक
और आंखे नम होती थी।

माँ की तबियत
बाबूजी की खैरियत
घर के हालात

## शून्य से शून्य तक

भाई बहनों की पढ़ाई की बात
कभी संतुष्टि के आंसू
तो कभी गमगीन आंखे
यह ही तो थी चिट्ठियों की दुनिया।

अब वे अहसास कहाँ से लाऊँ
व्हाट्सअप पर भेज पोस्ट
झट जबाब पाऊँ
इंतज़ार का आनंद
और तड़पन
सब छू मन्तर हो गए
हम अब तकनीकी दुनिया के हो के रह गए।

कभी हम लिखा करते थे
खतों में
दिल उतारा करते थे
बैचेनी का वह आलम
ख़त न मिले तब भी
और धडकनों का बढ़ना
ख़त मिले तब भी ।
डाकिया बाबू
गाँव में शहरों में
लिए
एक ही झोले में
खुशिया गम
बांटते सबको हरदम

# शून्य से शून्य तक

रुतबा था उनका
गाँव गाँव ख़ुशी में,
गम में हिस्सेदार थे।

अब हालात ये है
ख़त संदूकों में सो रहे हैं
दर्द लिए
भावनाओं के सम्प्रेषण को रो रहे हैं ।

# 6. ज्वार भाटा

सिन्धु तट पर अघोषित समर छेड़े
ज्वार-भाटा
लहरों के आँचल में
समेट लेता है
समस्त गंदगियों को
साथ ही उकेरे अरमानों को
अंतस की गहनतम
गहराईयों में समावेशित हो
तूफ़ान ला देता है
ज्वार-भाटा

मेंरा मन उद्विग्न है
उद्वेलित है
झंझावत की सहज दशा समाये
डोल रहा है,
अनुबंध रचित मानसिक विडंबनाओं में
विचलित हो कुछ बोल रहा है
ज्वार-भाटा का आवागमन
स्पंदित हृदय को कम्पित कर रहा है,
और कर रहा है प्रताड़ित
अंतर्मन की उठती भावनाओं को,
स्थिर स्थापित सत्य को

# शून्य से शून्य तक

आस्थाओं के प्राकट्य को

ज्वार–भाटा
सागर के हृदय में संगृहीत
विशाल विचारों की लड़ी
प्रस्फुटित हो बाहर आने को आतुर
विचार
धर्म के, कर्म के, मर्म के
दुःख के, सुख के, अन्दर के, बाहर के,
अपनों के, परायों के,
किस्से कहानियों के
राजा रानियों के
उत्तम तो निष्कृष्ट भी
विचार धरातल पर तो नही होते,
विचार गंभीर होते हैं सोने नही देते
विचारों का ज्वार–भाटा
कदापि अपने अनुकूल होता

# 7. बचपन के दिन

लाल हरे पीले रंग रंगीले
सतरंगी
सपने लेकर सोया था
बचपन की यादों में खोया था
खेल खेल में लड़ कर घर आना
आकर माँ की गोद में दुबक जाना
सुबक सुबक फिर रोना
माँ का आंचल लगे तब सलोना
नैनो से जल धार जो टपकी
रोक देती माँ की ममता भरी थपकी
आँखों से बहते ये मोती
लोरी के सुरों में माँ उन्हें पिरोती
भूल सारे दुःख दर्द
सुख सपनो में खो जाऊं
बचपन के वो दिन
भुलाये भुला न पाऊं ।

गली मोहल्ले के बच्चे
कितने प्यारे कितने अच्छे
निष्कपट निश्चल
कितने सच्चे
खेल खेलते कितने न्यारे न्यारे

## शून्य से शून्य तक

कहाँ गए वो खेल अब बेचारे
छुप छुप्पवल, गुडिया का ब्याह
कभी धप कभी छांह
गिल्ली डंडा, आँख मिचौली
लंगड़ी घोड़ी, हंसी ठिठोली
लट्टू की नोक, कंचे की मार
गुड्डी की ढील, मंजे की धार
लड़ते झगड़ते फिर भी लगते प्यारे
एक घर सा मोहल्ला था
लोग थे अपने सारे के सारे
अब तो घर भी बेगाना हुआ
क्या क्या बतलाऊं
बचपन के वो दिन
भुलाये भुला न पाऊं ।

होली आती,
मस्ती लाती
लगता त्यौहार मना रहे
अब तो बस सूखा सूखी
रस्म निभा रहे
न रंगों की वो टोली है
फिर कैसी होली है
कहाँ गया
वो बड़ा सा रंगों का कठौता
जिसमे पकड़ पकड़

## शून्य से शून्य तक

हर शख्स को दिया जाता डुबोता
सर्र्र्ररर करती हुडदंग मचाती
रंगबाजों की टोली
मस्ती के गीत गाती आती
बूढ़े बच्चे जवान
सब में नयी उमंग जगाती
होली की खूशबू  और वो रंग
अब मैं कहाँ से लाऊं
बचपन के वो दिन
भुलाये भुला न पाऊं ।

बचपन में ही
बच्चे बड़े हो गए हैं,
उम्र से बहुत पहले ही वे
अपने पैरों पर खड़े हो गए हैं,
अब तो खेल निराले हैं,
कंप्यूटर विडियो के खेल
आँख फोड़ने वाले हैं
पीढ़ियों का यह अंतराल
पीढ़ी का न होकर
सदियों का हो गया है
परिपक्वता इतनी आ रही है
बचपन में ही पूर्ण ज्ञान हो गया है
सदी की चाल
विद्युत् गति सी अग्रसर है

## शून्य से शून्य तक

विज्ञान शिखर पर है
युवा विजेता सा प्रखर है,
नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी की
यह खाई कैसे भर पाऊं
बचपन के वो दिन
भुलाये भुला न पाऊं ।

# 8. विजयादशमी पर .....

नारियों की स्थिति पर नारी शक्ति की पूजा

हे तेजोमयी माँ !!!!
समग्र तेजों को समन्वित कर
बनी तू तेजस्विता...
हे नारी शक्ति स्वरुप महिसासुर मर्दनी
सिंदूर खेल का समापन हो चुका है,
जलाशय के नील शतदल
जिन्हें अर्पित कर कर तुझे पूजा
वे नील शतदल बाहें फैलाये
तुझे अपने आगोश में लेने को तत्पर हैं
तुम्हे तो जाना ही होगा माँ ,
यही तो रीत है
पीछे छोड़ रक्तबीज, शुम्भ-निशुम्भ,
महिसासुर से नर पिशाच
जो तुम्हे हर दिन डुबाएंगे
तेरे नव-रूप का हनन हर दिन कर जायेंगे.
शैलसुता तो उस दिन ही विसर्जित हो गयी थी माँ
जब चौदह माह की कन्या से
इन पिशाचो ने हवस वासना का खेल खेला था,
ब्रह्म चारिणी इस युग में बस मजाक भर है
कुष्मांडा के गर्भ से प्रति दिन
दुर्गाएं हत की जा रही हैं

## शून्य से शून्य तक

और हर हत्या पर
दैत्य शुम्भ अट्टहास करता है
आज हर दानव यह दु:साहस करता है
माता ! स्कन्द माता तो
दहेज़ की आग में जल चुकी है
बस आज उसके अंजर पंजर
नदियों में नालों में तैरते दिख रहे हैं
और दिख रहा है
नारी का जलता वजूद
एक वितृष्णा
एक घृणा

हे सिद्धि दात्री
हे काल रात्री
काल के भाल पर
सिंदूर लगा  या लगा रक्त
यह रक्त रंजित क्रीडा
नारी की अथाह पीड़ा
इस रक्त सिंदूर को
मत मिटाओ
तुम्हे विसर्जित होना है,
तुम्हे डूबना है
और डुबाना है साथ में
उन दानवों को
जो नारी अस्मिता को
भोग्य समझ

# शून्य से शून्य तक

भारतीय संस्कृति को रसातल ले जा रहे हैं
सुमंगलीरियं   वधूरिमां   समेत पश्यत ।
आप गृह की शोभा हो
हे शांता, परमात्मिका
जीवन गर्विता
नमिता नमिता नमिता

(सुमंगलीरियं   वधूरिमां   समेत पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं वि परेतन।।

यह वधू मंगलमयी होवे .

# ९. पुष्प की व्यथा

मैं पुष्प हूँ मैं पुष्प हूँ
सौंदर्य और सुवास का प्रतीक हूँ
कांटो के बीच जीना मेरी लाचारी है
फिर भी खुशबू देना मेरी खुद्दारी है
तोड़ तोड़ मुझको डाली से
सबने किया इधर उधर
कभी गिरा बाग में
कभी टूटा बिखर बिखर।

सीखा मैने समर्पण
कभी तर्पण
कभी अर्पण
नियति मेरी परिवर्तन
ईश की मैं भावांजलि
शवों पर चढा,
दी श्रद्धांजलि
प्रेयसी का श्रृंगार
सभाओं में बना उद्गार
फिर भी पूजा गया बार बार।

तीक्ष्ण सुई की नोक चुभा चुभा
धागों में पिरो पिरो

## शून्य से शून्य तक

माला एक बनाई
आहत था पर फिर भी
सुरभि बिखेरता रहा
घायल सीने से बोल
सदा प्रीत के
बोलता रहा
बन्ध कर धागों में
उन्मुक्त अर्पित होता रहा
अपनी खुशी अपने गम संजोता रहा।

कभी चढ़ बैठा शीश पर,
कभी प्रेयसी का हुआ गलहार,
कभी अलविदा होते शव का श्रृंगार
देवों की प्रतिमा पर सज
बना जीवनाधार,
यही मेरा संस्कार
यही मेरा संस्कार।

मकरंद भरा मेरा यौवन
आकर्षण का रहा केंद्र सदा
आमंत्रण मैं भ्रमर को देता रहा
कर सब कुछ समर्पित
मिटा भ्रमर की चाह में
यही सीखा मैंने यही पहचाना मैंने
प्रेम में बह जाऊं यही जाना मैंने।

# शून्य से शून्य तक

अभिलाषा आज भी रही अधूरी
ऐसी क्या मजबूरी
हिमगिरि के उस पथ पर
बिखेर मुझे हे वीर प्रखर
वीरों की बन जाऊं धूल
तभी कहाऊँ आदर्श फूल।

ऐ जीवन
सुमन दे रहे सन्देश
मुश्किलें हो कितनी भी,
छोड़ न देना निज स्वभाव,
परिस्थितियों में रहना पड़े कहीं भी
खुश रहना बढ़ाते रहो यश,
बढाते रहो प्रभाव।

# 10. पगली

नगर के व्यस्त
राजमार्ग पर
एक विक्षिप्त नवयौवना
देखा मैंने उसे दौड़ते
अपने को अपने में ही सिकोड़ते

अस्त व्यस्त वस्त्र
चिथड़े ही चिथड़े सर्वत्र
लहू रिसता अंगों से
जटाजूट से खुले खुले केश
अद्भुत परिवेश

नयन थे सूने सूने
एक वीरानी सी बसी हुई
चपलता से फिरते
मानो ढूंढ रहे हों
किसी स्वजन को
अपने प्रियतम को

देख
तीक्ष्ण प्रकाश पुंज
तीव्रता से नजदीक आता

## शून्य से शून्य तक

नेत्रों को चीरता
अपरिमेय
वास्तविकता से परे
मार्तंड सा प्रचंड
अभिशपित उद्दंड,

चीत्कार करती
दौड़ पड़ती
एक भय

एक प्रश्न
एक घटना
चलचित्र सी झलक दिखाती

वह इधर से भाग रही
वह उधर से तीव्र गति से अग्रसर
एक टकराव
हो गया बिखराव
भयावह नाद
और समाप्त
उसका सम्पूर्ण उन्माद

विक्षिप्ता चल बसी
विक्षिप्त अवस्था में
घटना ने असमंजित कर दिया

## शून्य से शून्य तक

लोग घेर कर
नज़रे समेट कर
देख रहे थे
एक अनजान लाश को
अपने अहसास को

कुछ दिनों पहले हुआ था एक हादसा
उसी मोड़ पर
उसी छोर पर
एक तीव्र गति से आते वाहन ने
कुचल दिया था एक नौजवान
मचल गया था जवान अरमान
वाहन उद्दंड तेज़ प्रकाश में देख न पाया था
और दूर खड़ी प्रेयसी देखती रही प्रकाश
समझ न पाई क्या हुआ था

तब से आज तक
देखती जब भी वह प्रकाश
होती हताश
दौड़ती
पर आज पहुँच ही गयी
अपने प्रिय के पास

# 11. वक़्त जर्ज़र है

वक्त जर्जर है अस्तित्व के विकार सा
दर्द जिंदगी का निकलते गुबार सा
निर्बाधता जीवन दर्शन की होती जभी
हौसलें, सहूलतें, हिदायतें, उसूल बेमानी होते हैं
जिंदगी हिस्सों हिस्सों में बटीं  सी प्रतीत  होती है
जज्बात हृदयंगम हो आत्मसात होते तभी

हर हिस्सा एक वाटर टाइट कम्पार्टमेंट होता है
किसी को दूसरे  से न कोई चाह
किसी को न कोई परवाह
एक सन्नाटा
एक खामोशी
टूटते विकल्पों को कचोटती है
व्हील चयेर की सी जिंदगी भी एक जिंदगी होती है
आश्रित, मोहताज़, हर पल उड़ने की आशा
परन्तु निराशा,
एक तडपन
उत्कंठा एवं एकाकीपन

इन्टरनेट युग में स्थितियां
कल्पनाओं से तेज़ उड़ान भरती हैं

## शून्य से शून्य तक

चोबीस घंटे सिमट कर छोटे होते जा रहे हैं
अपनो के लिए अपनों का समय निकलना दुष्कर है
हालात के प्रवाह में छोड़ देना ही श्रेयस्कर है

बंद कमरे में आती सूरज की किरणे अब नही सुहाती है
अंधेरों से एक अजीब सा प्रेम हो गया है
भारी फेफड़ों में जैसे कोई सांस अटक जाती है
इर्द गिर्द की चहलकदमी भी कोतुहल मचाती है
बेखौफ हूँ अब, अब न कोई डर है न कोई शिकवा है
जिंदगी जीने का सलीका तो अभी अभी सीखा है

झाँक अंतस की गहराई में देखा
विगत स्मृतियों की छांव में वेदना की आह को देखा
बेबसी को परखा, लाचारी को देखा
आत्म-शक्ति, इच्छा शक्ति, आत्म-बल प्रणेता हैं
रबर की सीमा होती है
टूट जाता है अतिक्रमण से,
जिजीविषा टूटने नही देती है
एक वही तो शक्ति है
जो हर कदम
साथ देती है साथ देती है

# 12. एकाकीपन -1

कितना एकाकीपन
कितना मन उन्मन
गगन पर सूरज अस्ताचल को
और दूर झुरमुटों से आती रोशनी वीरान हो गयी

धीरे धीरे अँधेरा है छा रहा
पीड़ भी बढ़ी जा रही
अंतस के कोप भवन में मै उदास
बैठा कोई देख रहा
और ऊपर की नीरव शान्ति तूफ़ान हो गयी

कान दरवाजे पर चिपके हैं
आँखे सपनों को तरसे
शायद उम्मीदें ही दस्तक दें
लम्हों की पहचान हो जाय
और हर पल उठती बैठती जिंदगी हैरान हो गयी

सूनी सी गम्भीर आंखे
अंतस में झांके
ढूंढ रही है उन पलों को
जिन्हें कभी जीया  था

## शून्य से शून्य तक

जिन्हें कभी मुस्कराया था
अठखेलियाँ थी
आशा ही आशा थी
नादान बचपन  था
अल्हड़ यौवन था
बारहों महीने बसंत था
अब वीरान आंखों में बीती मुलाकात जवान हो गयी।

गुलाब के उपवन में
पतझड़ क्या आया
कांटे ही कांटे निखर रहे हैं
कैक्टस बने बागीचे में उदास नजारे बिखर रहे हैं
एकाकीपन की हदें
उपवन भी अब डरा रहा है
छोटी सी बगिया डरावना जहान हो गयी।

शांत समंदर की लहरें
नीला आसमान
शीतल बयार
सुरभित धरा
शीतलता पाने को बहुत होती है
मिल जाये तो बात क्या बस सोच ही मुस्कान हो गयी।

# 13. एकाकीपन -2

अहसास एकाकीपन का
सर्वाधिक तब हुआ
जब तुमने साथ होने का दावा किया
पर लापता हो गए थे तुम
निगाहें ढूंढती रह गयी।

दुनिया के इस रेले में
भीड़ के इस मेले में
कितना अकेला हूँ
कोई तो समझे
मेरे इस एकाकीपन को
मेरे इस दुख को
मैं स्वयं भोग रहा हूँ
स्वयं आनंद ले रहा हूँ

भगवान ने जिंदगी भी
कितनी अजीब बनाई है
सच तो यह है
जिंदगी लोगों के साथ भी नहीं होती
जिंदगी लोगों के बिना भी नहीं होती

जीवन तो जागने से निंद्रा तक

## शून्य से शून्य तक

एक नशा है
एक अनुभूति है आनंद की
यह अनंत निंद्रा का आगाज़ है
अनंत की यात्रा तो
आनंद से ही आरम्भ होती है।

हम सबको
अलग अलग चेहरे दिए
अलग अलग नाम दिया
अलग पहचान दी
सबको अलग अनोखा पात्र बनाया

ईश्वर ने ऐसा ही चाहा
अगर न चाहते तो एक जैसा ही बना देते
हम इस दुनिया की भीड़ में
अकेलेपन से दुखी
ईश्वर को दोष देने लगे।
इस अंतर का सम्मान न करना
ईश्वर का अपमान करना है।

एकाकीपन की इस जिंदगी में
सबको साथ लो
दूर होगा एकाकीपन
दूर होगी मन की विकलता
कोई बड़ा कोई छोटा नहीं

सब समान है
सब इंसान हैं
आओ मिलजुल कर चले
अपना भी एकाकीपन दूर करें
दूसरों का भी खालीपन भरें।।

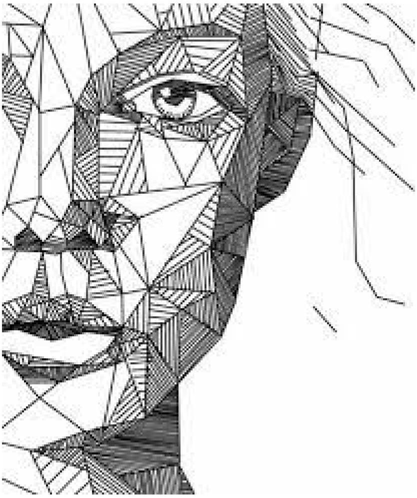

# 14. एकाकीपन -3

मैंने
समंदर को रौंद डाला
पैरों तले
यह सोच कर की
विगत स्मृतियाँ
कर देंगी दूर
एकाकीपन को
पर क्या
जल की दो चार बूँदें
धधकते मरुस्थल कि रेत को
ठंडक पहुंचा सकी है,

बैठे बैठे
समय बीतता जाता है
एकाकी मन व्याकुल हो उठता है
प्रतीक्षा रहती है
बस
एक सौम्य नीरव
शांति की
जो आकर मुझे
अपनी गोद में समा ले ।
आकांक्षाओं का दहन करती
जीवन की मरु-मरीचिका,

## शून्य से शून्य तक

इस वयसंधि में
किंकर्तव्यविमूढ़ बन ढूँढूं
जीवन विभीषिका
विगत स्मृतियों का विचार
कुछ खट्टा कुछ मीठा
अवगत परिस्थितियों से
दूरस्थ स्थित अंध कोह
चाह
एक दीप शिखा कि लौ
परन्तु
तरल तिमिर में उपलब्द्ध
मात्र
चिलिमिलिका प्रभा
अंतरिक्ष में ज्योतिर्मान
प्रकृति शक्ति चिन्ह सा दृढ़
अग्रसर
अग्निपथ पर भी
परिवर्तन की अभिलाषा
अन्तर्निहित प्रवाहित भय
तिलांजलि दे इनको
शैल श्रंग सा सुदृढ़
समस्त अवरोधों का
आचमन कर
रहूँगा
अग्रसर अग्रसर
यही साधना
यही आराधना ।

## 15. अन्नदाता

भूमि सहनशील है,
यह पढ़ा है, जाना है हम सबने
भूमिपुत्र क्यूँ नहीं रहे अब,
क्यों व्योम चीर वारिद कहकहाने लगे
क्यों वे करका पात से घबडाने लगे

क्या अब
राजनीति  की कल्मष पर
हरित धरा भी कलुषित हो गयी
या संतुष्टि परिवर्तित हो पराजित हो गयी
या सुजलां सुफलां शस्य वसुंधरा
कुपित हो जल फल विहीन हो गयी

अंध राजनीती वीथिका में
सरल अन्नदाता
धन विहीन
मात्र सांत्वना पर जीने को मजबूर हो रहा है,
क्यूँ ईश्वर भी आज कितना क्रूर हो रहा है

मानव जीवन अनमोल है मेरे भाई
निराशा के अंध कूप में मत गिरो
अधिकार तुम्हारा है इसे लेना होगा

## शून्य से शून्य तक

अगर अन्नदाता नहीं जी सकता
भारत धरा पर
अधिकार नहीं किसी राजनेता का
जीने का इस वसुंधरा पर

उठो उठो संघर्ष तुम्हे करना है,
आत्मबल दिखा
इस पाखंडी राजनीती का
निष्कर्ष  तुम्हे करना है

क्या यही संस्कृति हमने पाई है
क्या दुखद स्थिति आयी है
विदेशी विक्रेता तो बेच पिज़्ज़ा
अरबों कमा रहे,
अन्न दाता दे रोटी
जान अपनी गँवा रहे,
तुम आर्य पुत्र हो आर्य संस्कृति पहचानो
झुको नहीं मरो नहीं, अपने बल को जानो
संधान करो ऐसा शर,
रातनीति , अर्थनीति, समाज नीति
इन सबसे बढ़कर आज की प्रचार नीति
तुम्हे दिलाये सम्मान तत्पर

# 16. दशहरा

अभी अभी
एक सामूहिक कार्यक्रम में
रावण को जलवा कर आया था
तभी मार्ग के घुप अँधेरे में
अट्टहास करते  रावण को पाया था।

न जाने कहाँ से आ टपका मरदूद
वही दस शीश
वही भुजाएं बीस
चेहरों पर जलाए जाने की
न कोई शर्म न कोई लज्जा मौजूद।

बेशर्मों की तरह खिखिया रहा था
राक्षस राक्षसों की तरह चिंचिया रहा था

अरे अरे, ये क्या
टूट टूट उसके शीश अपने आप
बढ़ते गए , निकलते गए
रक्तबीज की तरह,
धीरे धीरे अनगिनत शीश
अनगिनत भुजाएं

## शून्य से शून्य तक

बढ़ा रहा वह पापी
अपनी देह को कर विग्रह ।

और उसने
अपने आगोश में
समेट लिया पूरा विश्व
सब तरफ रावण ही रावण दिखने लगे
एक अकेला राम
किसी एक कोने में
सिकुड़ा सा
पड़ा देखता रहा यह करतब,
कलयुगी जनता को
सूनी सूनी आंखों से
निहारता रहा वो अब तब ।

हे राम
अब क्या करूँ
कहाँ से लाऊं इतने राम
जो करें रावण का काम तमाम
अब तो पृथ्वी पर
राम की खेती ही बंद हो गयी
बस रावण ही उग रहे हैं
कौवे नुमा राक्षस
खेतों को चूग रहे हैं

# 17. जिंदगी

एक दिन
मैंने पूछा जिंदगी से
क्यूँ है इतनी उदास
बिखरे बिखरे सपने
अनबुझी सी प्यास,
जिंदगी की राह
क्यूँ हो रही इतनी कठिन
बिछे हुए है शूल ही शूल
बीतते  है दिन गिन गिन,
अनवरत
जिंदगी में जिंदगी का पात
प्रकृति से लेकर सबों का आघात
ह्रदय संकुचित भय अज्ञात,
कभीआततायियों का आतंक
कभी स्वजनों का कुठाराघात
अब आपदा नई
कठिन व्यापक दुर्दांत
जीवन आक्रांत
मानवीय मूल्य
क्षीण नितांत। ओह!
जिंदगी ने एक शब्द
में ही दिया उत्तर,
हमें किया अनुत्तर,

# शून्य से शून्य तक

जिंदगी दो दिनों का खेल
जियो भरपूर
प्रतिपल, प्रति क्षण
आनंदम, निष्काम
जिजीविषाम:

# 18. प्रभु तुम्हे प्रणाम करना चाहता हूँ

दिवस का अवसान हो रहा है
छाया भी लंबी होने लगी है,
कृषक भी खेत छोड़ जा रहे हैं,
गोधूलि की बेला में रंभाती गायें
धूल उड़ाती लौट रहीं हैं
मुझे भी तो लौटना होगा
फिर मै

क्यों जिद पर अड़ा हूँ
फिर क्यूँ वहीं स्थिर खड़ा हूँ ।

विहग के घोंसलों में जाने का दृश्य
क्षितिज पर अरुणिमा का दृश्य
कितना मनोरम है,
शांत नीरव रात्रि आने को तैयार है,
फिर मै क्यूँ खड़ा हूँ
संध्या तर्पण न करने की
जिद पर क्यों अडा हूँ

कितनी तैयारियां करनी हैं
निंद्रा देवी के स्वागत गान गाने हैं
दिन भर के क्रियाकलापों का चिंतन कर

## शून्य से शून्य तक

नई सुबह के आगमन में चोक पुराने हैं
नया सूर्योदय लेकर
नई सुबह आएगी
मुझे उस सुबह के स्वागत के
मंगल गीत लिखने हैं
कितना कार्य है और समय कितना कम
बस थक चला हूँ
रात्रि की गोद में विश्राम करना चाहता हूँ
प्रफुल्लित हो प्रथम आरुषि किरणों में
मैं प्रभु तुझे प्रणाम करना चाहता हूँ।
प्रभु तुम्हे प्रणाम करना चाहता हूँ।।

# 19. मेरी लाचारी

जब उठना चाहूँ ,
उठ न सकूँ
बैठने की जुर्रत कर न सकूँ
चाहत तो ऊंची होती है
एफिल टावर पर चढ़ जाऊं
जैसे तुम चढ़ी थी उस दिन
देखा था तुमने
दृश्य यूरोपियन संस्कृति का
देखा था तुमने
आर्च द ट्रम्फ और इंडिया गेट का अंतर
मुझे भी मन करता है
सब कुछ देखूं
साथ तुम्हारे चढ़ जाऊं जिंदगी की
अथाह ऊंचाई पर
पर चढ़ नही पाता
मेरी मजबूरी है या समय की लाचारी है
असहाय बना कर छोड़ दिया ऐसी बीमारी है ।।
और सुनो न
याद है तुम्हे
फ्लोरैंस की दोपहरी और वो गार्डन
जहाँ बैठे थे
हम तुम और तुम हम
न जाने कब पांच बज गए थे

# शून्य से शून्य तक

उठ चले थे हम अपनी राह
आज फिर
उस गार्डन में जाना चाहता हूँ
दरकिनार कर मजबूरियाँ
यादों की खरोंच पर
मरहम लगाना चाहता हूँ
सोचता हूँ
कब से तुम मेरी बैसाखी हो गयी
और मैं यादों में
घूम रहा हूँ इस बैशाखी के सहारे
रोम पेरिस
फ्लोरेंस और वेनिस ।।।।।

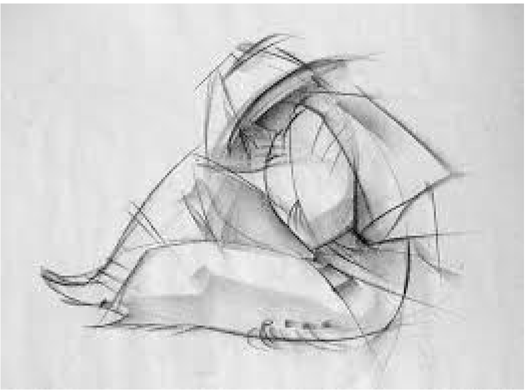

# 20. ताज महल

नयनाभिराम ये दृश्य
ये बाग बगीचे
ये ताल तलैया
ये जमुना का किनारा
दिलकश ये नजारा।

शिरी  फरहाद ने प्यार किया
और आई सहरा में नहर
हीर रांझा ने प्यार किया
और सहा जुल्मों कहर
कैश और लैला की कहानी
साक्षी है आज भी वो रेगिस्तान
और यहाँ
तीसरी बीबी और चौदवी संतान।

प्राण प्रिये सीता को पाने को
बनाकर जलधि पर रामसेतु
गये थे राम लंका रावण हराने को
प्रेम का प्रतीक तो है वो श्रीमान
न कोई दिखावा न कोई अभिमान।।

प्यार में मंदिर देखे मैंने

# शून्य से शून्य तक

देखे बाग बगीचे यहाँ
करते थे कृष्ण राधा रास
मधुवन कालिंदी के वृक्ष
झूले फूल अमलतास
पर देखा पहली बार
सुना पहली बार
की मकबरा भी होता है प्यार में
गाड़ा था बुरहानपुर
लाये आगरा दरबार मे।

वाह हमारी संस्कृति के रक्षकों
कह देते इमारत सुंदर है
नजारे सुंदर हैं
कला का अनूठा नमूना है
प्यार की तौहीन करने को क्यों इसे चुना है।।।।

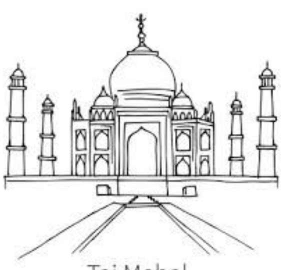

# 21. सजन रे झूठ मत बोलो

सजन रे झूठ मत बोलो।
परन्तु जब
काली घटा छाई हों
गरज गरज बादल ले रहे अंगड़ाई हैं
वफ़ा करवटें बदल रही हों
तमन्नाएं मचल रही हों
फिर सजन क्या करे ?

उम्र की दहलीज पर
अवसाद गहरा रहा है
मासके अंतिम दिनों में
पत्नी की बीमारी
और डॉक्टर की फीस
दवाई का पुर्जा
लहरा रहा है, फिर सजन क्या करे ?

पत्नी, जी हाँ अर्धांगनी
पूछ रही साजन से
कोहरे की नींव पर खोखली इमारत है
गृहस्थी शरारत नहीं इबादत है
पत्नी हूँ कोई गैर नहीं
समस्याएं मुख पर तैर रहीं

अब चुप न रहो कुछ तो बोलो
सजन हृदय की अर्गलायें खोलो
सजन रे झूठ मत बोलो ।

# 22. टूट गई डाली

एक शजर अडिग खड़ा
दे रहा है छाँव
हर्षित समूचा गाँव
डालियाँ कई उसकी
नित नित पोसती
नूतन नूतन स्वाद
झंझावत कैसे आया
क्यूँ आया
डाली एक टूट गयी
रुला रुला गया भर विषाद
धूप चमकीली
रेत चमकीली
सूरज चमकीला हो रुष्ट
बरसा रहा अगन आसमान
क्यूँ बना जा रहा जीवन
तपता रेगिस्तान
हृदय पर फूट रहे फफोले
काश कोई आ कोमल हृदय टटोले
कुलदेवी क्यों हो गयी रुष्ट
चेष्टायें व्यर्थ
बच न पायी शाखाएं
न बच पायी आशाएं

## शून्य से शून्य तक

टूट गयी डाली हैं
रो रहा माली है

अनर्थ यह क्या हुआ
व्यर्थ यह क्यूँ हुआ
वृद्ध नयनो को
बना मरुस्थल
क्या मिला ?
रुला रुला बगिया को
फूल  गिरा गिरा क्या मिला?

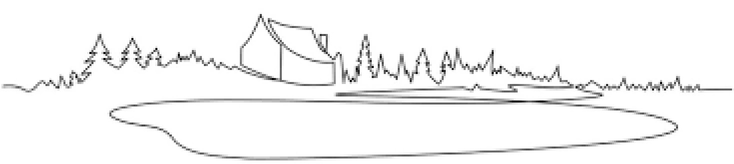

# 23. जीवन की पहचान

न आन है न शान है
जीवन की पहचान है
मुक्त होना  चाहता इंसान है
अर्गलायें घेर रही तन लहूलुहान है
जग का यही विधान है।

निविड़ क्षणों में व्यक्ति परेशान है
आती जाती लहरें
और गर्जित सागर में तूफान है
कल्मष गगन बदरी सघन
निराशाओं का वितान है
जग का यही विधान है।
दूर घने जंगलों में
दिया एक जल
रोशन करता जहान है
मुसीबतों में भी लबों पर
बरबस आती मुस्कान है।
जग का यही विधान है।

माजी में झांक कर देखता कोई नहीं
अपने वस्त्र मलिन हैं
यही उसकी पहचान है
मोक्ष और स्वर्ग की राह खोज

## शून्य से शून्य तक

आज सांसत में तेरे प्राण है
जग का यही विधान है।
इंसान है तू न भगवान है
प्रयत्न करले हज़ारों
जाना तुझे अंत मे श्मशान है
जग का यही विधान है।

# 24. खोई स्मृति

कितने भाव उकेरोगे
सूखी पड़ी रेत पर
गर्म हवा का झोंका आयेगा
सब कुछ ले उड़ेगा
नामोनिशान भी न बचेगा
रेगिस्तान में और क्या है
उड़ती रेत और गर्म हवा के झोंकों के सिवा
जिंदगी भर
चाँद को हथेली पर सजाया
परन्तु उम्र के इस पड़ाव पर
लाल सूरज जमीन पर लेटा है
कुछ कच्ची पक्की यादें हैं
जो मृगमरीचिका सी
एक मात्र जीने का कारण बनी हुई हैं
गर्म हवा में , उड़ती रेत में
इस आयु में
अपना बचपन ढूँढ रहा हूँ
और ढूंढ रहा हूँ
पूरे जीवन सफर का दर्द
उम्र भर खाई हुई वो गर्द
शायद मिल जाये सुखानुभूति
शायद मिल जाय खोई स्मृति।।।।

# 25. शून्य से शून्य तक

शून्य से शून्य तक
प्रारम्भ से अंत तक
कभी चला शूल भरी राह पर
तो कभी सोया फूलों की सेज पर भी
सागर  किनारे लिखी मैंने जिन्दगी थी
जिसे  आती लहरों ने धो डाला था
जीवन के लम्बे अंतराल में
समय के रंजित प्रवाल में
अनुभव कराती
चक्षु सागर में पूरित जल राशि,
ऊपर से शांत अन्दर से उद्वेलित
विष भी इसी में, अमृत भी इसी में
नीरव नीरस चित्त
लंबी डगर की  यह यात्रा
कितनी  टेढ़ी मेढ़ी
निर्दिष्ट पथ से बिखरती
आशाओं के शब्द से संवरती
कैसी विचित्र यह जीवन यात्रा
अनमोल क्षणों को आँचल में सहेजती
दुःख को कुरेदती
जीवन यात्रा का यही तो संकलन है
उपलब्धियों का यही तो आकलन है
शून्य से प्रारंभ यात्रा, शून्य पर समाप्त । ।

# 26. निहारने लगा गगन

जब आया
अस्ताचल गामी भानु  को अर्ध्य देने
जाह्नवी तट खडा पाषाण शिलाओं पर
निहारने लगा गगन भावशून्य सा

चक्षु खग हो गए.
आकाश की गहराइयों में,
कभी मेघ दर्पण में,
यत्र-तत्र विचरते से
मन के चित्र उभरने लगे

अनदेखा और अनछुआ सा कुछ,
गंगा में समाहित.
रक्तिम आकाश की आभा से आरक्त लहरें,
लहरों की छल-छल से आलोड़ित सा मन.
सारे खालीपन को निचोड़ती सी उच्छ्वास.
दिव्य भाव से स्पंदित,
प्रकम्पित सारी दिशाएँ,
निशब्द पवित्रता से भीगी.
आकाश अंजली बन चला था;
और हृदय के अर्ध्य चूने लगे थे,
उस चूने की आवाज़ में,

# शून्य से शून्य तक

रुदन छिप कर घुट रहा था.
और घुट रहा था
मन उत्पीडन का वह स्मृति चित्र
जो क्यों गगानाच्छादित हुआ जा रहा था

भाव-विह्वल ,प्रकाश-स्नात,
मौन के सागर में ध्यानस्थ
बाँधने को आतुर;
कोई छवि.
छूट-छूट जा रही थी,
अंजलि के जल के साथ ही गंगा में.
आवेग के आलोडन से,
बढ़ रहा था ज्वार.
मेरा अर्घ्य गंगा में.
समर्पण भाव से अनुग्रहित
और मैं मेरे  प्रेम को
अभ्र के हर अंश में
देख रहा था
मुस्कुराता सा

# 27. सुनो

सुनो!
अंतर्मन केन्द्रित कर सुनो
सृष्टि ने दिया है बहुत कुछ
आओ उसका आस्वादन करो,
आ देख
नीरव-भ्रमर गुंजन
से मन स्पंदित  हैं,
तरु तूलिका  से आकृतियाँ सज्जित हैं
प्रकृति दृश्य देख
हृदय प्रेम पियूष सरित है
चंचल चन्द्र -प्रभा
गगन पर है सुशोभित
आज मन प्रसन्न
तन प्रफुल्लित चित्त है पुलकित
शीतल समीर अवनी-गगन सुरभित करे है
मानो झंकृत वीणा के तारों सी
कविता स्फुरित करे है
क्या प्रकृति पियूष पान से वंचित रहना चाहोगे
तुम तो जीवंत स्वर्गानुभूती पावोगे ।

समझो !
तुम्हे समझना होगा

## शून्य से शून्य तक

समस्याओं का आना
एक परिवर्तनीय घटना है
प्रकृति की
रमणीकता तो है ममतामयी
सकल सौन्दर्य है आत्म-मयी,
यंहा उषा दुग्ध सा बिखेरती वात्सल्य है
धूप -छांव पसारते मेघों का चापल्य है
सहोदरा बन बांधती राखी
ये स्निग्ध रवि रश्मियाँ
प्रफुल्लित अंतस पर
ज्यूँ तैर रही मुग्ध नीरज पंक्तियाँ
अविरल संसृत जलधार,
झर-झर झरता जल श्रोत,
विहंगम प्रकृति दृश्य
हृदय तक प्रेम से ओत-प्रोत
हरित वसुंधरा,
सुरभित करते पलाश,
खगों की चहक,
क्षितिज पर धरा और नभ का मिलन,
गगनचुम्बी पर्वत शिखाओं को चीरती ये अरुणिमा
चित्रकार सी रच रही नभ-लालिमा
इन नाद के  उन्माद के
आल्हाद के उत्सर्जन से तुम नहीं झकझोरे जावोगे
तुम तो जीवंत स्वर्गानुभूती पावोगे

# 28. एक सरिता का उद्बोधन ......

निर्मल उत्ताल मारती
जब मैं बहा करूँगी तब
क्या तुम मुझे रोक पाओगे
नयन जल को स्त्रवित कर
अपनी आँखों से
वो बाते कहा करूँगी तब
क्या तुम मुझे  रोक पाओगे
सब क्रम उपक्रम धरे रह जायेंगे
तुम तो बस
एक कथा मात्र रच पाओगे
मुझे एक भीड़ बना
समंदर में धकेल पाओगे
मेरी कलकल धार को
व्यर्थ बता
मुझे टोकोगे तब
क्या तुम मुझे  रोक पाओगे
सरिता हूँ बहती हूँ
चीर  सीना महि का
समंदर में मिलने को
आतुर रहती हूँ,
तस्वीर बना मुझे
दीवार पर जरुर तुम चिपकाओगे,

पर

क्या तुम मुझे रोक पाओगे

पर्वतों को खंगाल

उतरती उफनती बेग धारा

कभी क्रोधित

कभी अंतस व्रीडित

मैं नहीं शुष्क सरिता

मेरे क्रोध को सह पाओगे

क्या तुम मुझे रोक पाओगे

जल में स्पंदन

करता तरंगों का सृजन

आत्मा होती सरिता सम

निर्मल मृदु मृदु अनवरत

सरिता का मिलन-समर्पण सागर से

अंतिम बंध है,

इस अंतिम बंध के मिलन से

क्या तुम रोक पाओगे

जीवन सरिता आत्मा

मनुज है असत्य

मानव अस्तित्व है ब्रह्म

ब्रह्म-ज्योति से मिलन को व्याकुल आत्मा

आत्मा परमात्मा के पावन मिलन को

क्या तुम रोक पाओगे

# 29. मेरा भारत

अतीत की धरोहर
कल्पनाओं का प्रतीक  भारत,
वेद की ऋचाओं सा पवित्र
राम कृष्ण का चरित्र
गीता ज्ञान का वैभव दर्शाता भारत,
नौनिहालों का प्रगति-पथ
युवाओं का स्वप्न बताता भारत,
आज कैसा है
वर्तमान से असंतुष्ट
भविष्य के लिए चिंतित
कर्णधारकों की महत्वाकांक्षा
आशाओं की मृगतृष्णा से ग्रसित,
निर्देश विहीन, दिशा हीन, चाटुकारिता
निज स्वार्थ साधना
निकृष्ट मनोकामना
न न्याय पर विश्वास
न नीति  पर विश्वास
न राज नीति  पर विश्वास
विश्वास –अविश्वास के मध्य झूलता
मेरा भारत , यही है आज का भारत
यही है कल का भारत
यही है आज-कल का भारत

# 30. (2013 की लिखी रचना)

भ्रष्टाचार एवं अनाचार की अनल में
देश भस्मीभूत  हो रहा है
दूर किनारे बैठा नीरो
चैन की बांसुरी बजा रहा है
धैर्यवान युधिष्ठर भी आज अधीर हो उठा है,
नारायण देख देख वीभत्सता रो रहा है
आ त्रिभुवन नाथ , कर पांचजन्य का शंखनाद
सुप्त अर्जुन की तन्द्रा भंग कर
हो जाने दे दूसरा कुरुक्षेत्र
उठ गांडीव की टंकार सुना
अनाचारियों का संहार सुना
पथ भूल कर जलधर चीत्कार रहा है
गगन का भानु शांत हो
बादलों की ओट में सीत्कार रहा है
प्रचंड तेज़ को लौटा दे नाथ
पापाचारी हो जाएँ भष्मसात
विष हीन दन्त हीन सर्प से
भ्रष्टाचार के दानव नही मरने वाले
कालकूट गरल भरे, विषधर को पूजेंगे
जो अत्याचारियों के प्राण चूसेंगे
प्रभु इस पावन धरा का करो कल्याण
हरो दुर्योधनों के प्राण

# 31. अमिय रस रसवंती

अमिय रस रसवंति, हरी-भरी धरा बसंती
पुष्प पुष्प रच रहे चित्र विचित्र लाजवंती ।

जी हाँ यह अमिय रस ,
यह विचित्र चित्र रचते पुष्प
बहुत पहले
जब वक्त हमारा हुआ करता था,
तब
सुरभित करते थे
जीवन धरा को
सीने में फौलाद हुआ करता था,
पिघलते फौलाद का लाल सुनहरी रंग लिए
युवा जज्बात हुआ करता था,
हर टहनी पे एक गुलाब हुआ करता था,
काँटों काँटों का हिसाब हुआ करता था,
महक गुलाब की
सपनों तक में समाई थी
सारी रात खूशबु का सैलाब हुआ करता था,
पन्नो पर बिखरे रंगों सा ख्वाब हुआ करता था,
हर रंग पाने को एक मधुर झलक
स्याही में डूबा अहसास हुआ करता था
और अब

## शून्य से शून्य तक

महक गुलाब की बिखर गयी
झनक गुंजार की पिघल गयी
फफोले लगे हृदय  पर
मरहम लगाने कि की कोशिशें
जलन हुई ऐसी की
अंतरात्मा तक सिहर गयी
युवा जज्बात समय के अंतराल में
बहकर छितर गया
पिघला फौलाद सीने में
न जाने किधर बिखर गया,
उम्र भर की बदमिजाजी का
सबब मिल गया । ।

# 32. परछाई

एक दिन
पूछा मैंने
अपनी परछाई से
पकड़ मेरा हाथ
कब तक चलोगी साथ-साथ,
चली तो तुम भी जाओगी
एक दिन छोड़ मेरा हाथ,
वैसे भी तुम्हारी फितरत
काबिले विश्वास नही है
तुम खाली उजालों की साथी हो,
अँधेरा आते ही साथ छोड़ जाती हो,
जब जब सर पर कष्ट आता है,
प्रचंड सूर्य अपना तेज़ बिखराता है
तुम छोटी हो दुबक जाती हो
सुहाने मौसम
खुशहाली में, वैभव में
तुम चौड़ी लम्बी हो पसर जाती हो,
यह जग की रीत है,
अविद्या एवं विद्या को
साथ साथ तत्व रुप में आना ही पड़ता है,

बारम्बार धूप छाँव के खेल में

## शून्य से शून्य तक

कभी लम्बा तो कभी छोटा
हो जाना पड़ता है.
क्या तुम दे सकोगी
मेरा साथ
मुझे पूर्ण जीवन अमृत का आस्वादन ।

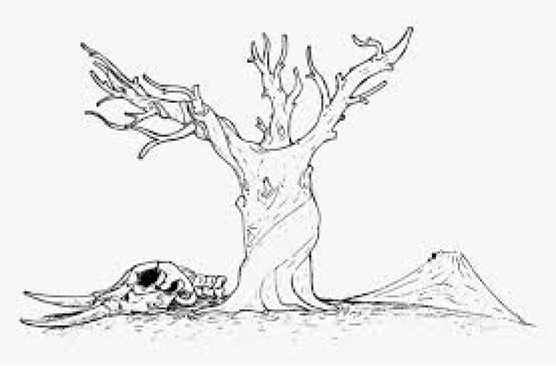

# 33. भ्रम

भ्रम
जी हां भ्रम
भ्रमित करता है
मन के दौड़ते अहंकार को,
अंतस के शापित संसार को।
क्षितिज पर धुएं का अंबार
अम्बर की नील पराकाष्ठा को
धूमिल तो कर सकती है
समाप्त नही।
सत्यता पारदर्शित होती ही है
अतिवाचालता अपने अस्तित्व के
खोखलेपन की द्योतक होती है
और दिग्भ्रमित होती है।
शब्द शब्द बहुमूल्य है
शब्द ईश्वर के समतुल्य है,
अज्ञानी ही जो चाहे बोल जाते हैं
अपनी पोल खोल जाते हैं
चना थोथा हो तो बजेगा ही
जो घना हो वह तो सदा सजेगा ही।
अतिवाद अपवाद और वाद सृष्टि क्रम में
अनपेक्षित हैं
व्यक्ति जो अनावश्यक और ज्यादा बोले वह उपेक्षित है।

# 34. भ्रम -2

भ्रम
भ्रमण करता है
मनुष्य की कल्पना के इर्द गिर्द
किंकर्तव्यविमूढ़ कर देता है,
सोचने की शक्ति
घूम कर
एक बिंदु पर केंद्रित हो जाती है
और केंद्रित हो जाती है
समस्त चेतनाएं
चेतस मन की विकृत अवस्था मे।

यथार्थ मिलों दूर
संध्या के पार
गहन कलुष रात्रि में छिपा
सुबकता रहता है,
क्योंकिभ्रम भ्रमण करता है।

कोशिशें
नाकाम हो जाती हैं
भ्रमित इंसान को
सत्य बताने की।
गहरे और गहरे

## शून्य से शून्य तक

अंध कूप में उतर उतर
उष्ण नीरवता
मृत्यु की अनुभूत कराती है
मानसिकता उबल कर
छद्म आहूत कराती है
और इंसान
डूबता रहता है
क्योंकि भ्रम भ्रमण कर

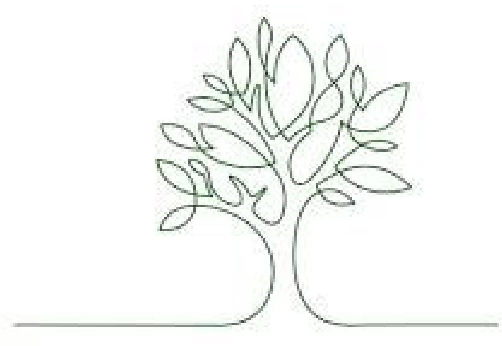

# 35. पतला मार्ग

एक संकरा सा पतला मार्ग
लहराता सा
सर्प की भांति
ऊँची पर्वत शिखा पर गुम होता सा,
घने जंगलों में घिरा,
छनी छनी धूप से आलोकित
सूखे पत्तों से आच्छादित
कटीली झाड़ियों को चीरता
बादलों में विलीन

लग रहा है
उम्र की आखरी दहलीज पर
कोई वृद्ध
जिंदगी का रस सूख जाने पर
अंतिम पड़ाव ढूंढ रहा हो,
थक गया हो चल चल कर
जिंदगी के शूल झेल झेल कर
जिसकी
उम्र के अनुभव
सूखे पत्तों से बिखर गए हों
कोई उसे रौंदता जा रहा हो
बस एक छनी सी रौशनी
जिंदगी खींचे जा रही हो ।

# शून्य से शून्य तक

नागफनी के जंगलों में खिला
गुलमोहर
खुशबू के तलबगार को
लालायित
ता-उम्र ढूँढ़ता रह जाता है,
अक्सर.........

मेहरबान नही मिलते उसे
और सत्य है
जिंदगी इसी तरह
कुवासित होती है ।

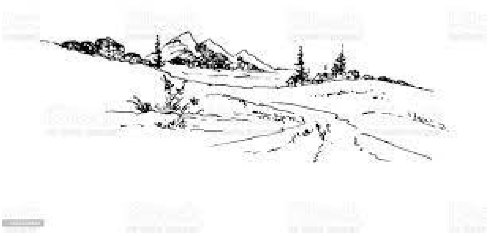

# 36. अभिलाषाएं

चलते चलते
रस्ते बन ही जाते है,
उम्मीदों के ढेर लग ही जाते हैं,
पथ-बाधाएं,
अभिलाषाओं को
विचलित तो करती है,
पर मुश्किलें हल हो ही जाती हैं ।
खोई दिशा मिल ही जाती है ।

कभी-कभी
बैठे-बैठे भी
मुसीबतें आ जाती हैं,
चन्द्रमा मलिन-मलिन लगने लगता है,
चाँदनी भी बुझी बुझी लगने लगती है,
बिजली चमकने की कौंध से क्या
कभी राह दिखी है,
राह देखने को
बादलों के छटने का इंतज़ार करना ही पड़ता है
बादल छंट जाने से
मलिनता टल ही जाती है,
खोई दिशा मिल ही जाती है ।

# 37. राखी

दहलीज पर बैठी बहना
बाट जोहती भैया का
छोड़ चूल्हा चाकी
ले हाथों में राखी,
आयेंगे भैया
सदा की तरह उठा हाथों में
लगा एक चक्कर
कहेंगे
लाडो तेरी याद बहुत सताती है,
बर्फीली पहाड़ियों में
बस तेरी बुनी स्वेटर ही सुहाती है,
कलाई पर बंधी राखी
बड़े जतन से सहेज
रक्खा हूँ बक्से में
देखता हूँ रोज ले नयन सजर
सरहद पर तू ही तू आती हो नज़र,
कितनी हो गयी हो दुबली
आने दो दामाद जी को लूँगा खबर।

ख्यालों में खोई थी बहना
आंसू से भरे थे नयना
हाथों की राखी भींग रही थी

## शून्य से शून्य तक

आरते की थाली कोने में सूनी सूनी  पड़ी थी,
घुसपैठियों से सामना करते
शहीद भैया हुए
मातृभूमि की रक्षा कर
राखी का मोल चुकता कर गए।

बंधाई थी उसने दो राखियाँ
बहन की रक्षा
और
रक्षा मातृभूमि की,
भारत माँ की रक्षा को सपूत
बंधा रक्षा सूत ।

# 38. मौन

दशरथ नही चाहते थे
राम वनवास
राम नही चाहते थे
सीता की अग्नि परीक्षा
लक्ष्मण नही चाहते थे
सीता गमन, फिर भी सब कुछ  हुआ,

पितामह भीष्म का मौन
धृतराष्ट्र का मौन
द्रौपदी की चीत्कार न सुन सका
परिणाम
महाभारत तो होना ही था,

नियति का चक्र था, या
मौन का दुष्परिणाम, जब
मन न चाह कर भी मौन
रहा जाता है तो
नियति
दुष्परिणाम में परिवर्तित हो जाती है
और
भविष्य सदा
विडम्बना पर रोता है

# 39. होली ( व्यंग्य )

होली के दिन
सुबह सबेरे आँख खुली तो
श्रीमती जी से फरमाईश कर डाली
प्रिये! जल्द लेकर आओ चाय की गरमागरम प्याली
वे भी होली के रँग में रंगी थी
कुछ ज्यादा ही होली में थी मतवाली
भोरे भोरे ही चाय में भंग की गोली मिला डाली ।

बस फिर क्या था
सुबह सुबह ही होली का सरुर आ गया
लाल गुलाबी नीला पीला छा गया ।

क्या बताऊँ यारों
कवितायेँ ऐसे सृजित होने लगी
बिन मात्रा बिन छंद के
गर्दभ राग में बहने लगी
स्वर एवं शब्दों का अतिशय मिलन
जब भ्रमित गुंजार करने लगा
मस्तिष्क चक्करघिन्नी खा खा
नयी नयी कल्पनाओं का संचार करने लगा ।

## शून्य से शून्य तक

एक के दो दो के चार तो थे ही
बीस कचौरियां और दस लड्डू कर उदरस्थ
कल्पनाओं की उड़ान में होने लगा मस्त
चेतना सातवें आसमान पर पहुँच
समाधिस्थ हो रही थी
अध्यात्म का अद्वैत सिद्धांत
अब परिपक्वता से लंबित था
शिव जी की लम्बी समाधि का सूत्र
भंग धतूरे की तरंग का व्यापक प्रभाव
अब सरलता से परिलक्षित था ।

रंगों की होली थी कि होली के रँग थे
देख अनुभूति प्रीत जाल की हम दंग थे
लाल काले हरे नीले मुखौटे
मुखौटों में छिपे मुखौटे
क्या असली था क्या नकली
हम गफलत में गाफिल थे ।

बस इतना मुख से निकल रहा था
अंततः सब सुख स्फुरित हो रहा था
होलिका का दहन तो क्या हुआ
अपना दोहन  हो रहा था ।

# 40. स्थित प्रज्ञ

स्थित प्रज्ञ तो कदापि नहीं,
पर जीवन में
चेतनता ही तो चाहता हूँ ।
स्मृति भ्रम का निष्पादन कर
एकाग्रता ही तो मांगता हूँ ।

मेरी कामना
कोई अतिशियोक्ति तो नही,
मेरी कामना
मेरे अंतस की पुकार है
स्थिरता ही तो चाहता हूँ ।

जीवन संग्राम में
समर करते करते करते
थक सा गया हूँ
अब शांत चित
अवस्था ही तो मांगता हूँ ।

जय पराजय के द्वन्द में,
ऊंचाई नीचाई पर झूलता
यह मानव देह

# शून्य से शून्य तक

मंदिर के घंटे सा झूल रहा है,
स्वर निनाद इतना तीव्र है की
अंतरात्मा तक झकझोर जाती है,
नाद वस्तुतः गाम्भीर्य का प्रतीक  है,
गंभीरता एवं शांति का वरण हो
बस इतनी सी कामना ही तो चाहता हूँ ।

अब मात्र सरलता का
मार्ग चल
स्थावर जंगम का विवाद छोड़
सचेतनता ही तो चाहता हूँ,

नाथ कर पूर्ण अभिलाषा
चित्त शांत हो
बस बारम्बार यह ही तो पुकारता हूँ ।

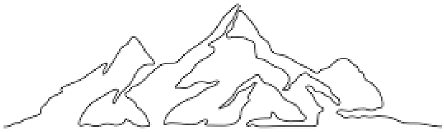

# 41. आत्म-मंथन

जीवन में
कुछ ऐसे क्षण भी आते हैं,
मन चाहता है
की समय ठहर जाये
और हम कोई भी निर्णय नही ले पाते
भविष्य के उस दामन से बचते
भविष्य जो कितने उलझन भरे
सवाल लाने वाला है,
जो अतीत को आत्म-मंथन के
सागर में पाने वाला है

समुद्र के किनारे आती जाती लहरें,
लहरों से दूर जाती,
पास आती
कागज की कश्ती,
मन के मंथन की तरह
कभी अतीत में तो कभी आज में
कभी भविष्य को ढूँढती जीवन-शक्ति,
अनबुझे प्रश्नों से अनवगत
उत्तर को खोजती प्रयत्न में सतत,
जिंदगी चलेगी अनवरत

## शून्य से शून्य तक

समय तो निरंतर गतिशील है
यह है मेरा जीवन
असमंजस क्यूँ
काल के अंतराल में बदलाव नही होते,
भविष्य निर्मित करने को
उत्तरों में ठहराव नही होते,
उत्तर तो हमें ही देना है,
ठहरे वक्त को नए आयाम की परिधियों में लेना है ।

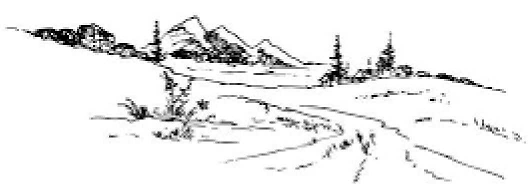

# 42. चिर विश्राम

नीरवता ,
अखंड नीरवता
क्यूँ इतना मायूष  हुआ जा रहा है मन
सूखे ठूंठ
बियाबान बंजर सी लग रही है जिंदगी,
अकेला हूँ,
बिलकुल अकेला
पतझड़ के दरख़्त सा खाली खाली हो रहा हूँ,
नागफनी के जंगल में भटकता मै,
ढूंढ रहा हूँ एक खामोश शांत सी पगडण्डी,
घर जाने की राह,

कोई राह, तक रहा है मेरी,
हजारों दुआएं की थी मैंने,
असीम सुख  प्राप्त करने की,
धीरे धीरे समय समीप आ रहा है,
पिया मिलन को मन व्याकुल हो रहा है,
मालूम है, प्रिय
वहीं  मिलेगी चिर शान्ति,
कभी न ठूंठ हो सकने वाली फिजां,
पलाश के फूलों सी मोहक घटा,
और चिर विश्राम ।

# 43. वन बालाएं

बचपन में देखता था,
एक लहराती बलखाती सापिन सी
पगडण्डी जाती हुई
ऊपर दलमा की पहाड़ी पर
जाते थे उसके साथ
उन आदिवासियों के
जज्बात,
जिजीविषा के सौगात,
शैल शिखर पर
बसी वो जनजाति
आधुनिकता से दूर
अपनी पहचान की मोहताज
अपने अस्तित्व को संवारती
चींटियों मकोडो को
खाने को मजबूर,
तोड़ कर केंदु के पत्ते
कुसुम के फल चिरौंजी के दाने
गुजर बसर को
वही किस्से पुराने.
पर्वत बालाएं कर्मठ, मेहनतकश
सर पर ढोती
मीलों लकड़ी के गट्ठर
शायद एक दिन की
रोटी मिल जाय ।

# 44. जीवन

जीवन
बुलबुलों सा भ्रामक है
बुलबले पारदर्शी होते हैं
और झलकती है सतरंगी आभा
इनसे जब इनके पार देखता हूँ,
पर फुर्र से बिखर जाते हैं
अस्थायी
ज्यूँ हथेलियों से रेत फिसलती हुई देखता हूँ
ज्यूँ भ्रामक असत्य प्रचार देखता हूँ ।

जीवन भी दूर से सुहावना होता है
परन्तु जीवन मार्ग कंटक भरा होता है
मिथ्या वचन ज्यूँ प्रलोभित करते हैं,
स्वप्न टूटने पर ये ही
विचलित करते हैं ।

अनिश्चित असत्य को पहचानना होगा हमें
जीवन-सत्य के दुर्गम मार्ग को जानना होगा हमें,
तभी जीवन गति अबाध होगी
तभी धरा पर अनुभूति स्वर्ग की निर्बाध होगी ।

# 45. चाह

चाह यही है,
मैं पुष्पलता बन लिपट जाऊं
तुम्हारी देह की
समुचित महक
मुझ मे रच बस जाए
मेरी प्रातः की प्रथम सांस
तुमसे सुरभित हो जाय
और उसी क्षण '
तितली बन मैं खूब मंडराऊं
दिनभर उसी महक में बहकूँ
और रात भर
स्वयम को समेट कर
तुम्हारे हृदय के गुलदस्ते में
निज अस्तित्व को विलीन कर दूँ,
क्योंकि तुम रात भर एक तूफान बन
मेरी अर्ध निंद्रा में
मुझे विचलित कर रहे थे
सोचती हूँ
क्या तो बिखर जाऊं
या तो संवर जाऊं
यही तो अंत है मेरी रचना का ।

# 46. जीवन उद्देश्य

कब क्षितिज पर
लालिमा का अंगार होगा
कब वसुंधरा पर
पोषित हरित श्रृंगार होगा
कब पुनः दिगंत अम्बर अपार होगा
कब पुनः सुखमय संसार होगा ।
कब कम होगी अंतस की वेदना
कब मनुज को मनुज से प्यार होगा
कब हर्षित मेरा संसार होगा ।

माना सागर मंथन से
मिला एक मात्र  पियूष पात्र
मोहिनी बने नारायण को
पर सागर के आँचल में
गरल भी था
पीया  जिसे शम्भू ने
विश्व कष्ट हारण को ।

शिव नाम
उसका ही होता
जिसने भी किया कर्म निष्काम
आशीर्वाद मिलता

## शून्य से शून्य तक

दीन–दुखियों का
संसार  में यह ही सबसे बड़ा सत्काम ।

पर अभी तो घटायें काली छाई हुई हैं
मार्ग भी है अति दुर्गम
लौ दीपक की टिमटिमाई हुई है
भूलभुलैया में गुम
ह्रदय वर्जनाएं चरमराई हुई है ।

जीवन के अंतराल में
कुछ क्षण ऐसे भी आते हैं
समूचे वृत को मर्माहत कर जाते हैं ।

गतिशील समय यह
भविष्य को निर्धारित कर जाता है
विश्व को दे एक दिशा
नूतन पथ प्रदर्शित कर जाता है ।

पता नहीं कब क्षितिज पर
लालिमा का अंगार होगा
कब पुनः दिगंत अम्बर अपार होगा
कब पुनः सुखमय संसार होगा ।

## 47. वेदना

छुप-छुप बहते आंसुओं को
निज हाथों से बदलना सीख गया,
झूठी मुस्कराहटों से
हृदय-वेदना ढकना सीख गया ।

नयन-रस अब
नहीं बह रहे व्यर्थ,
आकुल नहीं उन्मन मन,
इच्छाओं का रहा न कोई अर्थ ।

जीवन तो जीवन है
नहीं-मात्र यह बहता पानी,
कर हृदय दृष्टिपात
सत्यता जीवन की है जानी ।

ऊँचे-ऊँचे आदर्श किये
जीवन मध्य आत्मसात,
प्रसन्न जीवन मेरा कर
नैसर्गिक परम्पराओं को प्राप्त ।

जान गया क्यों

# शून्य से शून्य तक

अवनि इतनी तपित,
अम्बर भी न दे सके सुख,
जीवन से ही जीवन प्रफुल्लित ।

राह कितनी भी थी कठिन
चलता रहा मै रुका नहीं,
संघर्ष हर पल आते रहे
लड़ता रहा झुका नहीं ।

अब और जान गया
जीवन का क्या परम सत्य,
जो झुक गया
उसका जीवन बचा नहीं ।

झूठी आशाओं से ऊँची दूकान
सजाना भूल गया
संघर्ष जीवन बना
ग़मों को भुलाना भूल गया

# 48. काल के अंतराल में

जीवन में कुछ ऐसे क्षण भी आते हैं,
जब मन चाहता है कि  समय ठहर जाए
जब हम कोई भी निर्णय लेने लायक न रह पायें
भविष्य के उस दामन से बच जाएँ
जो कितने अनसुलझे सवाल लाने वाला है,
जो अतीत को आत्म-मंथन के सागर में पाने वाला है

समुद्र के किनारे आती जाती लहरें,
लहरों से दूर जाती,
पास आती
कागज की कश्ती,
मन के मंथन की तरह
कभी अतीत में तो कभी आज में
कभी भविष्य को ढूँढती जीवन-शक्ति,
अनबुझे प्रश्नों से अनवगत
उत्तर को खोजती प्रयत्न में सतत,

जिंदगी चलेगी अनवरत
समय तो निरंतर गतिशील है
यह है मेरा जीवन
असमंजस क्यूँ
काल के अंतराल में बदलाव नही होते

# शून्य से शून्य तक

भविष्य निर्मित करने को
उत्तरों में ठहराव नही होते
उत्तर तो हमें ही देना है
ठहरे वक्त को नए आयाम की
परिधियों में लेना है ।

# 49. मेरा जीवन

मेरा जीवन
पतझड़ का मौसम
सूखे पत्ते सा उड़ बिखर बिखर चला
न जाने कुछ इधर चला कुछ उधर चला , मेरा जीवन.......

आशाएं क्षत हुई,
प्रेम लय गुंजित था जो अवनी तल पर
अंतस को कर धुआं धुआं छा गया नभ पटल पर
संपीडित आशाओं को पुन: डस ठहर चला , मेरा जीवन.........

आरुषी के प्रथम प्रहर में
अभी भी बाकी है रात्री के अंधकार की छाप
हृदयाघात पर औषधि लेपन बन चला अभिशाप
भूत भविष्य वर्तमान की मानसिकता से उठ ऊपर चला ,मेरा जीवन...........

ये जीवन तो ,एक किनारा है
सुख दुःख की लहरे आती जाती
कुछ में है कलकल निनाद कुछ झंझा बन टकराती
वेदना का अब मोल कहाँ, सुख सपन बन भ्रमर चला ,
मेरा जीवन..............

# 50. अंधकार

रात भर दीपक
तड़पता रहा,
उजाले की आस में
जलता रहा
उसके दर्द को किसने देखा
उसके मर्म को किसने समझा
भोर होगी
रवि रश्मिया
बिखरित होंगी
अहमियत दीपक की
विचलित होगी,
अन्धकार
कितना भी प्रगाढ़ हो,
विवशता अगाध हो,
दिवाकर के आगमन से
लुप्त हो जाती है तमसता
ब्रह्म ज्ञान का ज्योति पुंज
निस्बाध
आलोकित हो ही जाता है । ।

# 51. पगडंडियाँ

ये पगडंडियाँ
चढ़ती है
टेढ़ी मेढ़ी सी
उस पहाड़ी की ओर
और उतर जाती हैं सीधे
अतीत के अंतराल को छोड़ते
अंतस की गहराइयों में
चीरती हुई जंगल जलेबी के पेड़ों को
जहाँ है एक नैसर्गिक सौन्दर्य
मिलन स्वर्णरेखा एवं खरकई का
पर अब नही रहा वह प्राकृतिक दृश्य
जहां लगता था कभी
मेला टुसू पर्व का
ऊपर निचे जाते लकड़ी के झूले
चाट पकौड़े के खोमचे
लगती थी ढेर सारी दुकानें
अब वहाँ चार लेन की सड़क हो गयी है
उसके साथ हो गया है कोंक्रीट का जंगल
आती जाती गाड़ियों का प्रदूषन
आधुनिकरण में खो गया
वह सौन्दर्य
और साथ ही खो गया है
वह पचास साल पुराना बचपन

## शून्य से शून्य तक

आज भी बचपन बुलाता है
बार बार जाकर उन पगडंडियों को
नीचे खींच  लाने का
प्रयत्न करता है ।

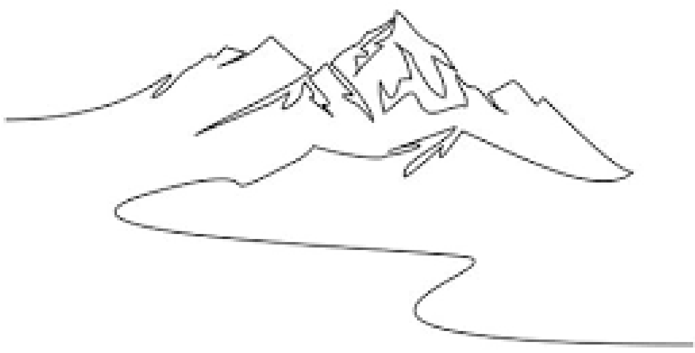

# 52. एक नयी सुबह हो चुकी थी

नयन खुले जब सुबह-सुबह,
देखा हर ओर प्रकाश था,
भोर की लालिमा-युक्त किरणों का,
जल पर प्रतिबिंबित प्रभा का आभाष था ।

हरित मखमली कालीन पर,
ओस की बूंदे ,
चमक रही थी मोती समान,
गगन पर मुक्त,पक्षी
कर रहे थे कलरव गान ।

मेरे अन्दर का,
दूर हो चूका था अंधकार
और,
एक नयी सुबह हो चुकी थी ।

भुवन भास्कर,
सात घोड़ो के रथ पर सवार,
अबाधित गति से,
उठ प्राची से,
निकल पड़े

करने क्षितिज पार ।

मै भी झटक तनाव,
भय-मुक्त,
निकल पड़ा,
अपने गंतव्य,
निकल पड़ा,
दृढ़ कर निज मंतव्य ।
मेरे अन्दर का,
दूर हो चूका था अंधकार
और,
एक नयी सुबह हो चुकी थी ।

सत्य है , प्रत्येक अंधियारी रात्रि पश्चात्
एक नवीन प्रातः का
आरंभ होता है,
परिवर्तन शील जग में
निश्चित है परिवर्तन होता है ।
अच्छे दिन बुरे दिनों का , सिलसिला
अटूट क्रमवार जीवन संजोता है,
सब दिन न होत एक समाना
जग रीती यह सब जग जाना ।
मेरे भी दिन बदल गए थे,
एक नयी सुबह हो चुकी थी ।

# 53. मन भी आहत

जब मन में अतिशय क्रोध हो, उनपर जिन्हें प्यार दिया मान दिया एवं उन्होंने ही धोखा दिया विश्वास घात किया तब मन में कुछ ऐसे ही विचार आते हैं क्या ऐसे में बीती ताहि बिसार दे वाली लोकोक्ति सत्य है, विचारणीय है ।

अनेक मिले इस लम्बी राह में,
मित्र बन आये, घात लगा चले गए,
मन भी आहत,
तन भी आहत,
बस अनल संघात लगा चले गए,

जल रही एक ज्वाला अंतस में,
हृदय -शूल छुपाउं कैसे ,
अधीर है मन ,
गरम है पवन,
चैन कहाँ पाऊँ कैसे ,

मन तो अति प्रतिक्रियावादी
घात के बदले घात लूँ प्रतिशोध मैं,
मन का आतप,
जीवन का तप ,

## शून्य से शून्य तक

सोच रहा, हूँ नहीं अबोध मैं,

स्वजन कह रहे क्षमा शील बनो,
आतुर न बनो, धीर बनो,
देकर यहाँ
पावो वहां
दया दिखा, मनुज वीर बनो,

प्रतिशोध की ज्वाला है तीव्र संकुचित
बीती ताहि बिसार दे नही लग रहा उचित
लूँ न प्रतिशोध कहलाऊं भीरु न यह भान रहे ।
दूर हो मन-व्यथा,
तोड़ दूँ क्षमा-प्रथा,
गर्व से मस्तक ऊँचा करूँ यह अरमान रहे ।

# 54. रुष्ट हो गया भगवान

भगवान् मेरा
मुझसे रूठ कर न जाने
कंहा खो गया
मै
ढूंढ रहा उसे
सागर किनारों के
छिछले जल में
तैरने का हर प्रयास
हो रहा निष्फल
वापस पलट कर
पाता हूँ अपने को किनारों पर ही
और
असहाय
क्रुद्ध आसमान को निहार
सोचता हूँ
भगवान् मेरा
मुझसे रूठ कर न जाने
कंहा खो गया

हर प्रयत्न मेरा
अंधेरों से उजालों तक जाने का
बीच राह में
गर्द के उड़ते गुब्बारों में

## शून्य से शून्य तक

खो जाता है,
और बस
रह जाते हैं अँधेरे ही अँधेरे
रोशनियों से
नाता जोड़ने की
हर कोशिश
कोशिश ही रह जाती है
क्यूंकि भगवान् मेरा
मुझसे रूठ कर न जाने
कंहा खो गया

जिज्ञासा तुम्हे मनाने की
हो चुकी समाप्त धीरे धीरे
क्योंकि
मेरी खता कितनी बड़ी है
मै नही जानता
पर जानता हूँ
तू नही मानेगा
तू रूठ चूका है
अब शाम हो चली है
सांध्य अर्घ का समय हो चला है
परन्तु रूठे प्रभु
तेरे बिना कैसी आराधना
मान भी जाओ अब
क्यूँ
भगवान् मेरा

# शून्य से शून्य तक

मुझसे रूठ कर न जाने
कंहा खो गया

प्रातः का बालार्क भानु उदित हो चुका है
गंगाजली ले निकल चुका हूँ
अंतिम प्रयास को
अंतिम सांस को
अंतिम आस को
साथ लिए
रुष्ट इष्ट शायद मान जाए
मेरा तो क्या
जी रहा हूँ
जी लूंगा
ईश जब तक चाहे
भव की बाधाएं झेल झेल
दुखो को पी लूंगा।
हे विश्व के तारणहार
कुछ तो कर कल्याण
दुखी है संसार
अब तो मंडप में आजा मेरे ईश्वर
रूठना मनाना छोड़ त्रस्त जीवन को संयमित कर।
फिर न कहूँ
भगवान मेरा
मुझसे रूठ कर न जाने
कहाँ खो गया।।

## 55. दर्द

दर्द
जब बढ़ कर
सागर बन जाता है
तब
मैं बन जाता हूँ किनारा
बढ़ कर सह लेता हूँ
आते ज्वार को
जाते भाटे को
और
समेट लेता हूँ अंतस में
सभी आती दूषित
गंदगियों को
जो न जाने कहाँ कहाँ से
बह कर चली आती है
मुझे मैला करने को,
दर्द का सागर
बादलों की गडगडाहट में
और भी
भयावह हो जाता है
तब
सिमट कर किनारा
मुझसे निकल कर

# शून्य से शून्य तक

सिकुड़ जाता है
और उन नदियों में समां जाता है
जो इठलाती उमड़ती घुमड़ती
मदमाती
लिए साथ तमाम
द्वेष मोह की कलुषता
उस दर्द के सागर में
अंतर्मुखी हो जाती है
सोचता हूँ
सागर कैसे सह लेता है
सब कुछ
क्यों उसमे कभी
बाढ़ नहीं आती
कभी क्यों वह
अपनी सीमाओं का
अतिक्रमण नहीं करता
क्या इसी को
इंसानियत कहते है
क्या यही मनुजता है ।

## 56. सत्य

मैने देखी
हत्या गाय की
और खुद गाय बन गया
लोगों की भीड़ आयी
साथ मे नारे लायी
मेरी ही हत्या हो गयी
समझाया
आकाश से चूते
दर्द को देख
घटाटोप अंधियारे को देख
तू तो देख सकता है
जुगनू न समझ खुद को,
मैं दीया लिए आया हूँ
तू देख अब तो
गुलाब के पौधों पर भी
नागफनी निकल आयी है
और
बन गयी यह
विशाल भीड़
न जज्बातों का अहसास
न जिंदगियों का मूल्य आसपास
नरगिस के बगल में खड़ा
रजनीगंधा का फूल
लगाया था

पर दोनों ने अपनी अपनी
जमीन तलाश ली है
अलग अलग
और तलाश लिए हैं
अपने अपने धर्म,
खुशबू फूलों की
जहर उगलने लगी
शहर–गाँव
आदमी–इंसान–मनुज
सब भीड़ बन गए
और भीड़ ने भीड़ को मार डाला।
यही सत्य है।

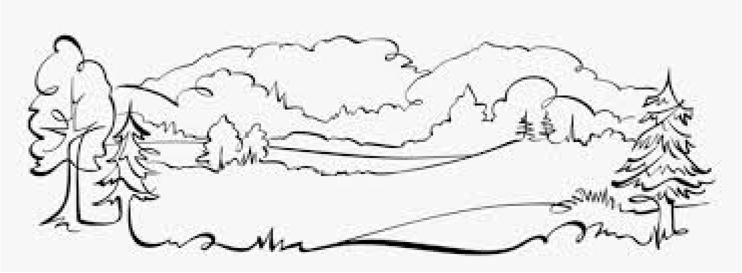

# 57. आदिवासी महिलायें

आज विश्व आदिवासी दिवस है मेरी एक पुरानी रचना उनको समर्पित इस कविता में बादाम पहाड़ का चित्रण है यह वही क्षेत्र हैं जहाँ से महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्रौपदी मुर्मू जी आती हैं यह कविता उनकी और उन जैसी आदिवासी वनबलाओं को समर्पित है।

वन बालाएं
आधे आने का दोना
चटपटे चिरौंजी दाने का,
मीठे मीठे रसीले केंदू फल का,
खट्टे मीठे जामुन का
दलमा से लाती आदिवासी वनबालाएं
नाक पर चांदी की बड़ी सी नथुनी
गले में बड़ा सा कडा
पाओं में चांदी की कड़े वाली पायल
मात्र साडी अधोवस्त्र तो कभी पहना ही नही,
यह होता था पूर्ण श्रृंगार.
धरती की बेटी धरती का प्यार ।
सांवले रंग में गज़ब के पानी का उतार । ।

अब तो यह भी कहानी है,
वन देवियाँ
नक्सलवाद की शिकार

## शून्य से शून्य तक

गुमराह
हाथों में अब हथियार है,
चिरौंजी, केंदु, जामुन के दोने नही
अब आँखों में प्रतिशोध का अंगार है ।

किसने भरा यह जहर
तुम तो ऐसी नही थी
तुम तो पर्वत से उतरती
कलकल सी झरती
स्वर्णरेखा और खरकई की धार थी,
तुम तो सिंघभूम के छउ नृत्य की वांग्मय पुकार थी ।

पर्वतीय सुन्दरता
उन्मुक्त नदियों की चंचलता
पगडंडियाँ
झाड झाड़ियाँ
वन्य पशु की कुलान्चों सी तुम्हारी कुलांचे
अथक परिश्रम, स्वेद बिंदु का शृंगार
चली आओ उसी अवतार में छोड़ शस्त्र छोड़ राग-द्वेष
हे वन देवी तुम्हारा वही रुप शोभनीय है,
तुम्हारा वही रुप वांछनीय है। ।

बचपन में देखता था,
एक लहराती बलखाती सापिन सी

## शून्य से शून्य तक

पगडण्डी जाती हुई
ऊपर दलमा की पहाड़ी पर
बादाम पहाड़ की लोहे की खानों पर
जाते थे उसके साथ
उन आदिवासियों के
जज्बात,
जिजीविषा के सौगात,
शैल शिखर पर
बसी वो जनजाति
आधुनिकता से दूर
अपनी पहचान की मोहताज
अपने अस्तित्व को संवारती
चींटियों मकोडो को
खाने को मजबूर,

मगज पिघला दे ऐसी गर्मी
उसपर लोह अयस्क के पत्थर
खोदती तोड़ती
देखा मैने
इन वन बालाओं को
मीलों चलकर आती
माथे पर गट्ठर लाती
जिजीविषा की यही तो पराकाष्ठा

तोड़ कर केंदु के पत्ते
कुसुम के फल चिरौंजी के दाने

## शून्य से शून्य तक

गुजर बसर को
वही किस्से पुराने.
पर्वत बालाएं कर्मठ, मेहनतकश
सर पर ढोती
मीलों लकड़ी के गट्ठर
शायद एक दिन की
रोटी मिल जाय ।

# 58. अंतस उद्वेलित है

जन्म दिवस की पूर्व संध्या पर मन में कुछ विचार आये
उन्हें पंक्तिबद्ध करने का प्रयास

अंतस उद्वेलित है, संबंध विचलित है
यूँ लग रहा है
शंकित तृषित मानव पिपासा
समय वेग से भी तीव्र है
अंतराल की परछाईयाँ
बचे खुचे भविष्य को
व्यथित तो करेगी ही।

अहम ब्रह्मास्मि आत्मसात कर
अद्वेत से द्वेत की संक्रांति
असंभव सी प्रतीत होती है।
विगत वर्ष का आंकलन
मात्र क्रोध लालसा संचालन।

सुसुप्ति से समाधि की यात्रा
या यात्रा भय से मृत्यु की
मानव भी बड़ा हठीला है
मिल जाय तो और और
न मिले तो शोर शोर।

## शून्य से शून्य तक

त्रस्त हुआ अवश्य
जिन संबंधों को अपरिमेय समझा
वे स्वार्थ के
अहम के झूठे पुलिंदे निकले
संबंधों का बलात्कार करते दरिंदे निकले।

माँ की कोख से उद्भव हुआ तब
शायद माँ के मुखमंडल पर आई
उस समय की आभा
आज तक वैसी ही बनी हुई थी
जब मैंने उन्हें अलविदा कहा
दर्द चुकता नहीं, दर्द चूता है
जन्म दात्री का कर्ज
जन्म दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पण से
शांति अवश्य देता है।

जीवन के उत्कर्ष पर
होते संघर्ष पर, अतिशय व्यथित
चिंतित कुंठित, अर्घ बेला पर
सांध्य तर्पण करने
नूतन दुकूल पहन
नूतन प्रात की प्रतीक्षा।
चरैवेति चरैवेति ।।।।

# 59. अर्गलाएं

लोहित सूरज ढल रहा, दे जीवन विश्राम
पुनः बटोही आ रहा, पहन दुकुल अभिराम
अस्ताचलगामी भुवन भास्कर
ओम निनाद और यह लोहित अम्बर
सांध्य अर्चन कर उद्भास निरंतर
तन को झंकृत करती कोशिकाएं
जीवन गांठो को बांधती ये अर्गलायें।
समय कम और काम ज्यादा बचा
उधार का संचित समय कहां से लाऊं मैं।
वर्जनाएं असीमित भ्रमित
कैसे इन अर्गलाओं को खुलवाऊं मैं।

कोई तो होगा रकीब जो मिले मुझे
कोई तो होगा हबीब जो मिले मुझे
बन मोहसिन मेरा उलझनों को सुलझा दे
गुमराह को राह बता दे
और नज़ीर दिल को समझा दे
ऐसा नसीब कहाँ से लाऊँ मैं।
वर्जनाएं असीमित भ्रमित
कैसे इन अर्गलाओं को खुलवाऊं मैं।

मौत भी आये तो चैन से
जान भी जाए तो चैन से

# शून्य से शून्य तक

जिंदगी की दुशवारियाँ भगा
अरमान जगाए तो चैन से
जिजीविषा न रही अब
अनलहक की बातें हो रही अब
जीने की तमन्ना अब कहाँ से लाऊँ में।
वर्जनाएं असीमित भ्रमित
कैसे इन अर्गलाओं को खुलवाऊं मैं।

मात्र मृत्यु ही शास्वत सत्य है जानता हूँ
काम बहुत  है समय कम है मानता हूँ
चरैवेति चरैवेति चला जा रहा हूँ
अदिप्त दीप सा थका जा रहा हूँ
सुबह की ठंडी होती लौ सा जला जा रहा हूँ
न जाने कब तेल समाप्त हो जाये
न जाने कब रात्रि की प्रज्वल्लित शिखा
इस अप्राप्य पिपासा को प्राप्त हो जाये
सनैः सनैः बुझते इस दीप को रोशन करने
और तेल कहाँ से लाऊँ मैं।
वर्जनाएं असीमित भ्रमित
कैसे इन अर्गलाओं को खुलवाऊं मैं।

# 60. मेरा बचपन

यादों के भंवर से
उलझ उलझ रहा,
वो खोया अतीत
वो बचपन,
बचपन कि शरारतें,
शरारतों में उन्माद,
उन्माद कि उनकही कथा

वो घर कि छत,
छत पर पानी कि टंकी,
टंकी पर चढ़ कर वो पतंग उड़ाना
अपनी कटे तो कस कर झल्लाना,
पड़ोसी कि कटे तो जश्न मनाना

वो मोहल्ले का स्कूल ,
स्कूल का मैदान,
मैदान में मस्ती भरा फूटबाल का खेल
वो ठाकुरबाड़ी,
वो गिल्ली डंडा और मंगलवार,
मंगलवार को प्रसाद के लिए ठेलम ठेल

वो रंगों कि होली,
होली कि टोली,

## शून्य से शून्य तक

टोली में हुडदंग,
हुडदंग में झगड़ना
वो होली मिलन,
मिलन में ढप,
ढप कि ताल पर सबका झूमना

सरस्वती पूजा,
पूजा कि तैयारी,
तैयारी में भी मस्ती,
मस्ती में शैतानी
रात भर सिनेमा,
कव्वाली  और जात्रा,
सोच सोच आज भी होती है हैरानी

वो नुक्कड़,
नुक्कड़ में दादा का होटल,
होटल में चाय सिंघाड़ा
और सारे जहाँ कि चर्चा
वो ब्लैक आउट के दिन,
वो सायरन,
सारे दिन घूम घूम कर ,
बचने का बाँटना पर्चा

अंत में :-

# शून्य से शून्य तक

वो खौफनाक दृश्य,
दृश्य में मानवता होती शर्मसार
अधजली लाशें,
सर कटी  लाशें,
लाशों का अम्बार
या अली,जय बजरंगबली
का वह भयावह शोर
शोर में जलता शहर,
शहर में आग ही आग,
दिल सहम उठता है
आज भी सोच कर मंजर घोर ।

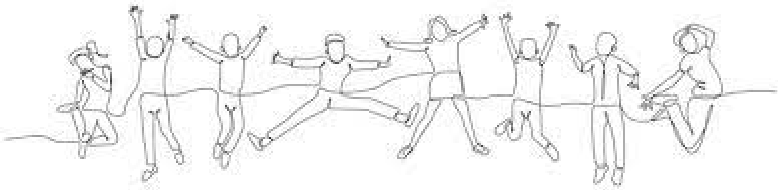

# 61. अजब बेचैनी

पीला पीला सा महताब
खामोश सी नजर आ  रही शमाएं
मानो मरघट पर जाकर
किसी ने बुझे चिराग हो जलाएं ।

अज़ब बेचैनी का आलम
उदासीन ऊंचे मुँडेरों पर
झुकी सी बैठी वो नार
ढूंढ रही हो अपना
टूटा हुआ सपना ,
कभी देखा था लंबा सपना
न हो सका जी कभी अपना ।

छोटे छोटे सपन
करते हर्षित तन मन
नैन गमगीन
उम्मीदों पर आसीन
अभिन्न
छिन्न छिन्न
अति उद्विग्न ।

खामोशी तो रहती सदा
क्षणिक है यह तूफ़ा

## शून्य से शून्य तक

तूफ़ानों से लड़ती
हिम्मत बांधती ।
सपने सँवारती
मायूस रात
हिम्मत तोड़ती रही
सीलन भरी पवन
दिल झँझोरती रही।

रोता हुआ सा दिन गुजर गया
मायूस सी शाम ढल गई
उदास दिन को कोई चीर
दे गया अच्छा पैगाम
दिल बहुत बहक उठा
अब छैन का हो सब अंजाम।

भोर की अरुणिमा में
करती यथार्थ परिवर्तित
उतर नीचे वो अबला
बन सबला
हो गई खड़ी,
नई उमंग नई तरंग
और लिए नई अभिलाषा ,
सपने सँजोने का
अर्थ सही समझा गई । ।

परिचय:

# सुरेश चौधरी "इंदु"

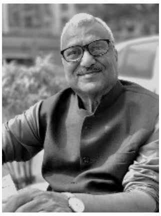

**पिता का नाम**: स्व: भोलाराम चौधरी

**माता का नाम:** श्रीमती दुर्गावती चौधरी

**जन्म स्थान:** जमशेदपुर (वर्तमान में झारखण्ड)

**जन्म तिथि:** 14 जुलाई 1952

**शिक्षा:** विज्ञानं में स्नातक, चार्टर्ड एकाउंटेंट्स, एकोल सुपेरियारे रोबर्ट दी सौबोर्न फ्रांस द्वारा पीएचडी (अर्थ एवं वित्त विश्लेषण) में स्वीकृत मानद ; जीवन वृतांत: शिक्षा उपरांत ८ वर्ष तक उषा मार्टिन ग्रुप एवं बिरला ग्रुप में कार्य, तत्पश्चात निजी इस्पात के कुल 18 कारखाने बड़ोदरा, गोधरा, मेघनगर, जमशेफपुर,चांडिल, बड़बिल, कोलकाता में लगाये, २००८ से आर्थिक सलाहकार के रूप में कार्यरत. लेखन में रुचि २०१० के पश्चात्.

२०११ में स्वास्थ्य के चलते सभी कार्य छोड़ कर केवल अध्यन एवं लेखन की और झुकाव तब से नियमित लेखन एवं शोध कार्य. यात्रा वर्णन, बाल कविता,काव्य, आलेख (शोध वैदिक सनातन दर्शन) एवं आर्थिक विषय पर, अध्यात्म में विशेष रुचि।

**सम्मान :**

1.इस्पात में विशेष कर स्टेनलेस स्टील के उत्थान में विशेष योगदान हेतु "भारत गौरव" सम्मान प्राप्त।

2. विद्या वाचस्पति सम्मान (विक्रमशिला हिंदी विद्या पीठ)

3.पश्चिम बंगाल राज्यपाल द्वारा केंद्रीय राजभाषा समिति का राजभाषा गौरव सम्मान प्राप्त

4.अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन (पूर्वी सिंहभूम) द्वारा भाई हनुमानप्रसाद पोद्दार सम्मान।

4.अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्य शिखर सम्मान, (पूर्व में यह सम्मान नीरज जी, वाजपई जी, डॉ कर्ण सिंह इत्यादि को दिया गया),

5. प्रसिद्ध आचार्य चाणक्य सम्मान (संघ की पत्रिका चाणक्य वार्ता ग्रुप द्वारा) महामहिम राज्यपाल जगदीश धनकड़ द्वारा श्रेष्ट सहित्यकार हेतु।

6 बिहार साहित्य सम्मेलन जो कि बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने स्थापित की है द्वारा साहित्य मार्तण्ड सम्मान

**पुस्तकें:**

कुल 30 पुस्तकें प्रकाशित, कई अन्य प्रकाशन के क्रम में । इनमे अनुवाद, काव्य, शिक्षा, आर्थिक, अध्यात्म विवेचना इत्यादि हर विषय पर हैं।

१. श्री दुर्गातिविनाशनी: २. प्रांजलि : ३. स्वरांजलि: ४. कुछ माणिक कुछ मोती: ५. वेद से वेदांत तक: ९ उपनिषदों एवं वेदों के दो प्रमुख सूक्तों को नए काव्य ६.आदिशंकर रस माधुरी: 7 भावांजलि ८. हर हर महादेव: ९. सुभाषितम: १०. भारतीय दर्शन ११. भारत के अन्य दर्शन १२. वैदिक सनातन धर्म (शोध प्रथम कड़ी): १३. बुलबुले सी जिंदगी: १४. तिमिर ढलेगा १५. महावाक्य: १६. गोपीगीत: १७. काव्य संहिता:. १८. भ्रम भ्रामक भ्रांतियां १९.मूल्यांकन २०. एक्सीडेंटल टूर इन हाइबरनेशन २१. सुरतरिंगिनी २२ मनुस्मृति समीक्षा २३.वेदों का परिचय २४.श्रीमद भागवत महापुराण समीक्षा २५ अड़सठ शरद २६ हे माँ २७ ऋचाओं से पावन माँ २८ चमत्कृत करती भाषा संस्कृत २९. है गोविंद हे गोपाल, ३०. बून्द बून्द सागर

भारत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन.

अन्तराष्ट्रीय स्तर के acedemia.edu नामक ब्लॉग में नियमित रूप से आलेखों का प्रकाशन |

### लोगों के विचार:

**दीपक नगाइच रोशन-प्रख्यात ग़ज़लकार:**

**आपकी रचना को पढ़कर सदैव ही ये अनुभव हुआ है कि जब तक आप जैसे रचनाकार हिंदी भाषा की निःस्वार्थ सेवा करते रहेंगे , हिंदी भाषा का वर्चस्व कायम रहेगा...**

**आपकी रचनाओं की एक एक पंक्ति बहुत ही रुचिकर, अर्थपूर्ण, सुंदर भावों और सार्थक संदेशों को अपने आप में समाहित किये हुए होती है। ...कमाल की कलमकारी और बेहतरीन शब्द संयोजन ... एक उत्कृष्ट और अद्भुत सृजन।**

सोहन सलिल– प्रसिद्ध गीतकार
प्रणाम स्वीकार करें आदरणीय सुरेश चौधरी साहब , आपकी कविताओं को पढ़कर लगता है की मैं पुनः विश्व विद्यालयीन पाठ्यक्रम में पहुँच गया हूँ , आज के दौर मैं जब हिंदी साहित्य घोर उपेक्षा के दौर से गुजर रहा है तब आप जैसे कविवरों कि रचनाओं को साहित्य कोष में श्रीवृद्धि करते हुए देखना सुखद लगता है . अशेष शुभकामनाओं के साथ सादर नमन
दीपिका द्विवेदी प्रसिद्ध कवयित्री
आज समझ में आया है तुलसी के सामने क्या कशमकश रही होगी तब जा कर उन्होंने "गिरा अनयन नयन बिनु वाणी "कहा होगा !!!तारीफ़ करने की हिम्मत ही नहीं है क्योंकि सूर्य को दीपक दिखाना मेरी फितरत नहीं सर !हाँ इतना अवश्य कहूँगी कि आपका आशीर्वाद सदा बनाए रखियेगा जिससे हम विस्मृत ज्ञान को फिर स्मृति पटल ला सके व् नवीन ज्ञान को ग्रहण कर सके ....
ओम नीरव : छंद विशेषज्ञ , साहित्य मनीषी
आपकी  उत्कृष्ट रचना मेरी दृष्टि में हिंदी साहित्य की एक अनमोल धरोहर है , आप कि लेखनी को नमन !सप्रेम,
सिया सचदेव: प्रख्यात शायरा
आदरणीय भाई साहेब आपकी रचनाओं में अध्यात्म है पवित्रता है , मैं अक्सर पढ़ती हूं आपको मेरे मन में आपके प्रति बहुत सम्मान है। आपका स्नेह और आशीर्वाद बना रहे।
रजनी मूंधड़ा: गीतकारा, गायिका
सच्चे साहित्य साधक स्वयं श्रेष्ठ रचनाकार होते हुए सभी की रचनाओं एवं रचनाकार का सम्मान करना सरल विनम्र रहना आपका बहुत बड़ा गुण हैं ,, आप जैसे साधक की हर युग में आवश्यकता हैं।
भीमराव झरबड़े : साहित्यकार
आदरणीय आप का व्यक्तित्व तो विस्तृत ज्ञान के अथाह सागर की तरह है।
डॉ. विनोद प्रकाश गुप्ता 'शलभ'
भूतपूर्व प्रधान मुख्य सचिव हिमाचल
आप मेरे मित्र और अद्भुत व्यक्तित्व के मालिक हैं - विद्वान व सहृदय-।
चंद्रिका प्रसाद पांडेय 'अनुरागी' प्रख्यात गीतकार

आप संस्कृतनिष्ठ, वैदिक, आध्यात्मिक, शास्त्रों के ज्ञाता, आधुनिक साहित्य से जुड़े आज के पितामह भीष्म।

गुरुमुख दास कटारिया: धर्मानुयायी

ऐसे तो आप ज्यादा तर श्री कृष्ण जी पर कविता और दोहे लिखते हैं और सारी हमारी हिन्दू संस्कृति पर भी लिखते हैं परन्तु कभी-कभी श्री गुरु ग्रंथ साहिब पर अनुवाद करते वह भी बहुत अच्छा लगता है। में कभी कभी सोचता हूं कि आप वही १०-२० साल पहले वाले सुरेश जी हैं अब तो आप कि चहरे का नुर देख कर तथा आप कि वाणी और शब्दों में अध्यात्म कि झलक दिखती और महसूस होती है में परमात्मा से प्रार्थना करता हूं आप को भगवान और भरकत दें।

अल्पना सिंह: चर्चित कवयित्री

आप साहित्य के विद्वान या प्रकांड विद्वान हैं, संस्कृत और हिंदी भाषा पर आपका समान अधिकार है, साहित्य के शुद्ध विशुद्ध प्रेमी हैं, निरन्तर अध्यन में लगे रहते हैं, अपने मौलिक सोच विचार को काव्य रूप में प्रकट करते हैं । असपक व्यक्तित्व अनुकरणीय है , आप उम्र के इस पड़ाव में , रोग ग्रसित होते हुए भी कर्मठता के जीवंत उदाहरण हैं, आप जैसा व्यक्तित्व परिवार , समाज राष्ट्र, मानव जगत के लिए प्रेरणास्रोत है, आपकों शत शत नमन।

ईश्वर करुण: विश्व विख्यात गीतकार

आप इस युग के प्रेरणा पुरुष हैं।

रवि प्रताप सिंह: राष्ट्रीय अध्यक्ष शब्दाक्षर

आप अपने आप में एक उदाहरण हैं, जहाँ तक मेरी जानकारी है प्रो. श्याम लाल उपाध्याय जी के देहावसान के पश्चात कोलकाता में आपके अलावा संस्कृतनिष्ठ हिंदी का इतना समृद्ध कवि कोई नहीं।मातृ पितृ भक्ति क्या होती है कोई आपसे सीखे । मैं तो सार्वजनिक रूप से आपकों बंगाल का श्रवण कुमार कहता हूँ, सौभग्यशाली हूँ कि आपका सानिध्य और स्नेह प्राप्त है।